खण्ड-418, अंक-3
मंगलवार, 2 वैशाख, शक संवत् 1919
(22 अप्रैल, 1997 ई0)

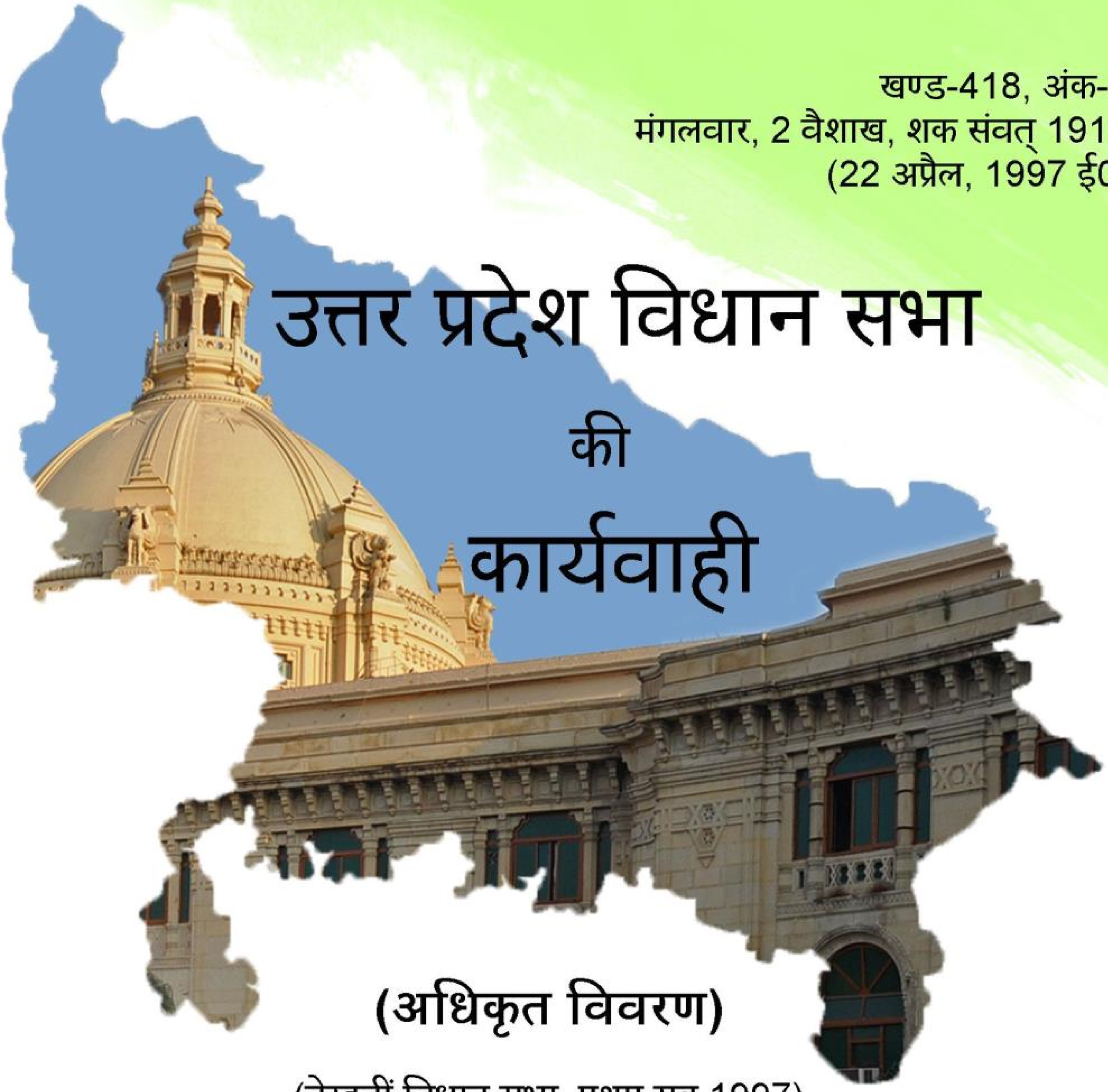

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

(तेरहवीं विधान सभा, प्रथम सत्र 1997)

खण्ड 418 में 6 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ, उत्तर प्रदेश (भारत)
1997

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |
वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 21 रुपये |

विषय–सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
उपस्थित सदस्य	क
वर्तमान विधान सभा के सदस्य श्री ब्रह्म दत्त द्विवेदी के निधन पर शोकोद्गार	1–14
विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य सर्व श्री बनवारी लाल, लखपत राम शर्मा, सूर्य प्रसाद अवस्थी, श्रीश चन्द्र अग्रवाल, मोहम्मद असरार अहमद, राम पाल सिंह, अब्दुल रऊफ लारी, मदन पाण्डेय, मोती लाल अवस्थी, लक्ष्मी शंकर यादव, परिपूर्णानन्द वर्मा, मोहम्मद शफीउर्रहमान अंसारी, खुशहाल सिंह रांगण, श्रीमती गंगा देवी विशारद, सर्वश्री त्रेपेन सिंह नेगी, रफीक अहमद खां, मारकण्डेय सिंह, नवरंग लाल, मन्नू लाल द्विवेदी, ओम प्रकाश पासवान, राम स्वरूप, विजय पाल सिंह, राघवेन्द्र सिंह, करन सिंह यादव, अमरेश चन्द्र पाण्डेय, नेकराम शर्मा, शिव वक्ष सिंह राठौर, जवाहर यादव, सतीश भाटिया, सईद मुतर्जा, शिव नाथ काटजू, बाबू लाल, कुसुमेश, हनुमान प्रसाद मिश्र, काजी जलील अब्बासी, मरगूब अहमद खां, श्रीमती सुखरानी देवी, सर्वश्री बाबा राम अधार यादव, जंग बहादुर सिंह पटेल, जगदीश शरण रस्तोगी, दाऊ दयाल खन्ना, भगवान दास वरनवाल, रामराज शुक्ल, लक्ष्मी रमण आचार्य, श्रीमती जदुरानी, सर्वश्री अकबर हुसैन बाबर, चन्द्रभान सिंह, दधीचि सिंह, श्रीमती पद्मा सेठ, सर्वश्री बाबू लाल सरोज, राजा बहादुर, पशुपति नाथ शरण सिंह, डा० राम जी लाल सहायक तथा वीरेन्द्र प्रताप शाही के निधन पर शोकोद्गार	14–23
सर्वश्री नीलम संजीव रेड्डी, हितेश्वर सैकिया, बेअंत सिंह, एन० टी० रामाराव, श्रीमती जानकी राम चन्द्रन, सर्वश्री डा० एम० चेन्ना रेड्डी, डा० बी० गोपाल रेड्डी, दिनेश सिंह, राम कृष्ण खत्री, शिव वर्मा, उपेन्द्र नाथ अश्क, यित्जाक राबिन, श्री डेंग श्याओ पिंग, लक्ष्मी शंकर व्यास, बाला साहब देवरस, श्रीमती अरुणा आशफ अली तथा बीजू पटनायक ख्याति प्राप्त विशिष्ट महानुभावों के निधन पर शोकोद्गार । ...	23–32
हरिद्वार में सोमवती स्नान पर्व के समय पर भगदड़ में, चरखी दादरी की विमान दुर्घटना में तथा सउदी अरब स्थित मीना शहर के अग्निकाण्ड में दिवंगत यात्रियों के संबंध में शोक प्रस्ताव (स्वीकृत)	32–33
बंगला देश के पच्चीसवें मुक्ति दिवस के वीर बलिदानी शहीदों की स्मृति के संबंध में शोक प्रस्ताव (स्वीकृत) ...	33

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

(तेरहवीं विधान सभा)

मंगलवार, दिनांक 22-4-97

निम्नांकित सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सभी सदस्य उपस्थित थे :–

अखिलेश कुमार सिंह, श्री	रायबरेली
अजय राय, श्री	वाराणसी
अतीक अहमद, श्री	इलाहाबाद
अब्दुल खालिक, श्री	अलीगढ़
आर० के० चौधरी, श्री	लखनऊ
ओमवती देवी, श्रीमती	बिजनौर
कवर पाल सिंह मास्टर, श्री	सहारनपुर
गोमती यादव, श्री	लखनऊ
जितेन्द्र कुमार जायसवाल उर्फ पप्पू भइया	गोरखपुर
दिवाकर विक्रम सिंह, श्री	सिद्धार्थनगर
धर्मज्ञ मिश्र, श्री	हरदोई
धर्मपाल सिंह, श्री	बरेली
नरेन्द्र, श्री	आजमगढ़
नरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री	हरदोई
नवाब सिंह नागर, श्री	गाजियाबाद
परमानन्द दण्डी, स्वामी	रामपुर
फतेह बहादुर, श्री	महराजगंज
फागू, श्री	मऊ
बाबू लाल कुशवाहा, श्री	बांदा
भाई लाल, श्री	मिर्जापुर
भोला शंकर मौर्य, श्री	बदायूं
मथुरा प्रसाद, श्री	कानपुर देहात
राम आसरे सिंह कुशवाहा, डा०	कानपुर नगर
राम स्वरूप शर्मा, श्री	मथुरा
रिजवान जहीर उर्फ रिज्जू भइया, श्री	गोण्डा
रूप चौधरी, श्री	मेरठ
वेद प्रकाश सिंह एम०एस०डा०, श्री	बिजनौर
शिव गणेश लोधी, एडवोकेट	रायबरेली
शिव पाल सिह यादव, श्री	इटावा
शिव प्रताप शुक्ल, श्री	गोरखपुर
श्रीनिवास मणि, श्री	देवरिया
सूर्य प्रताप शाही, श्री	देवरिया

नोट :–श्री आलमबदी व श्री वसीम अहमद ने शपथ नहीं लिया है ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

मंगलवार, दिनांक 22 अप्रैल, 1997

(विधान सभा की बैठक, सभा मण्डप, लखनऊ में दिन के 11 बजे अध्यक्ष श्री केशरी नाथ त्रिपाठी की अध्यक्षता में आरम्भ हुई)

वर्तमान विधान सभा के सदस्य श्री ब्रह्म दत्त द्विवेदी के निधन पर शोकोद्गार

* मुख्य मंत्री (सुश्री मायावती)–

मान्यवर, मुझे अत्यन्त खेद के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के वर्तमान सदस्य, पूर्ण मंत्री तथा भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री ब्रह्म दत्त द्विवेदी की फर्रूखाबाद में 9/10 फरवरी, 1997 की रात्रि को गोली मार कर हत्या कर दी गई थी। स्वर्गीय द्विवेदी जी का जन्म 15 जनवरी, 1938 को ग्राम अमृतपुर, जिला फर्रूखाबाद में हुआ था। श्री द्विवेदी जी 1977, 1985, 1991, 1993 तथा 1996 में विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुये। श्री द्विवेदी जी विभिन्न आन्दोलनों में 1968 से लेकर 1991 तक 15 बार जेल भी गये। वह उत्तर प्रदेश विधान सभा की प्रतिनिहित विधायन समिति, विशेषाधिकार समिति, तथा कार्य-मंत्रणा समिति के सदस्य भी रहे। स्वर्गीय द्विवेदी जी, माननीय कल्याण सिंह जी के मंत्रि मण्डल में राजस्व एवं ऊर्जा मंत्री भी रहे। वे कई सामाजिक एवं शिक्षा संस्थाओं से भी जुड़े रहे। वे एक अच्छे कवि भी थे। उन्होंने मंजुल, संगम, संघर्ष तथा उरदाह जैसी पुस्तकें भी लिखी। मान्यवर, ऐसे समाजसेवी, कर्मठ, राजनैतिक व भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता की हत्या किसने की, अभी इस बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता, लेकिन मुझे विश्वास है कि सी०बी०आई० की जांच के बाद स्थिति स्पष्ट हो जायेगी। लेकिन जिसने भी यह घृणित कृत्य कर हत्या की, उसे कठोर दण्ड अवश्य मिलेगा।

श्री द्विवेदी जी के निधन से उत्तर प्रदेश ने एक कुशल राजनीतिक एवं समाजसेवी को खो दिया है। मुझे द्विवेदी जी के बारे में अच्छी प्रकार से मालूम है, जब मैं उनके सम्पर्क में आई, उनका किस किस्म का व्यवहार रहा, उसके बारे में मैं थोड़ा रोशनी डालना चाहती हूं। वर्ष 1993 में गठबंधन की सरकार बनी थी, लेकिन कुछ कारणवश हमें। जून, 1995 को समर्थन वापस लेना पड़ा और समर्थन वापस लेने के बाद भारतीय जनता पार्टी और कुछ दूसरे पार्टियों ने बिना शर्त समर्थन देकर उत्तर प्रदेश की जनता के हित में हमारी सरकार बनाने के लिये फैसला लिया। लेकिन 2 जून, 1995 को उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में गेस्ट हाउस में जो दर्दनाक घृणित घटना घटी, वह इतिहास के पन्नों में लिखी रहेगी और उसको छुपाया नहीं जा सकता। 2 जून, 1995 को जब यह घृणित घटना घटी, उस घटना में मेरे ऊपर जानलेवा हमला किया गया, विधायकों को किडनैप किया जा रहा था, उस दौरान भारतीय जनता पार्टी .....

(इस पर समाजवादी पार्टी के कई सदस्य एक साथ अपने-अपने स्थानों पर खड़े होकर अपनी-अपनी बात कहने का प्रयास करने लगे, जिससे सदन में घोर व्यवधान हो गया)

वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया।

श्री अध्यक्ष–

माननीय मुख्य मंत्री जी ने किसी दल पर आक्षेप नहीं लगाया है, कृपया आप लोग शान्त रहें ।

(समाजवादी पार्टी के सभी सदस्य लगातार अपने-अपने स्थानों से अपनी-अपनी बात कहने का प्रयास करते रहे, जिससे सदन में घोर व्यवधान होता रहा)

नेता विरोधी दल (श्री धनीराम वर्मा)–

[× × ×]

श्री अध्यक्ष–

आप एक मिनट के लिये अपना स्थान ग्रहण करें ।

श्री धनीराम वर्मा–

[× × ×]

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

माननीय वर्मा जी, यदि आप संसदीय शिष्टाचार का पालन नहीं करते तो बहुत दुख की बात है । मैं अध्यक्ष पीठ से खड़ा हूं, कृपया आप स्थान ग्रहण करें ।

(नेता विरोधी दल के खड़े होकर बोलते रहने पर)

अभी आरोप प्रत्यारोप कहीं नहीं है । कृपया आप लोग स्थान ग्रहण करें । माननीय वर्मा जी ने जो कहा है, वह नहीं लिखा जायेगा । माननीय वर्मा जी आप संसदीय मर्यादाओं का पालन कीजिये । कृपया स्थान ग्रहण कीजिये, अन्यथा मुझे इंगित करना पड़ेगा । आप इस अवसर की गम्भीरता को समझिये । मैं कुछ कहना नहीं चाहता, आप स्वयं इस पद को सुशोभित कर चुके हैं । मैं नहीं चाहता, कि कोई अशोभनीय अवसर सामने आये ।

(घोर व्यवधान के मध्य)

मैं इस प्रकार की अनुशासनहीनता नहीं चलने दूंगा और जो माननीय धनीराम वर्मा जी ने कहा है उनका एक शब्द भी नहीं लिखा जायेगा । मैं इनके कहे हुए प्रत्येक शब्द की भर्त्सना करता हूं और आधे घंटे के लिए सदन स्थगित करता हूं ।

(तत्पश्चात्, श्री अध्यक्ष ने 11 बजकर 5 मिनट पर सदन की कार्यवाही आधे घण्टे के लिए स्थगित कर दी । 11 बजकर 35 मिनट पर मार्शल ने सदन को सूचित किया कि मा० अध्यक्ष ने सदन का स्थगन 12 बजे तक के लिए और बढ़ा दिया है । 12 बजे सदन की कार्यवाही श्री अध्यक्ष के सभापतित्व में पुनः आरम्भ हुई ।)

[× × ×] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया जाय ।

सुश्री मायावती–

माननीय अध्यक्ष जी, मैं स्वर्गीय ब्रह्मदत्त जी के व्यवहार के बारे में बताना चाहती हूं। उनमें पार्टी पालिटिक्स से ऊपर कितनी मानवता और इन्सानियत थी, उसका उदाहरण 2 जून, 1995 को राज्य अतिथि गृह में हमारे साथ जो घटित हुई थी, और जो हमारे ऊपर जानलेवा हमला हुआ था .....

(नेता विरोधी दल तथा उनकी पार्टी के कई सदस्यों के एक साथ पुनः खड़े होने पर घोर व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

आप कृपा करके बैठ जायं। माननीय नेता विरोधी दल जी ने आसन ग्रहण कर लिया है इसलिए आप लोग भी कृपया बैठ जायं।

मैं आप लोगों को आश्वस्त कर देना चाहता हूं कि अगर किसी माननीय सदस्य की ओर से कोई आक्षेपात्मक बात कही जायेगी चाहे वह सत्ता पक्ष की ओर से हो, चाहे विपक्ष की ओर से हो, मैं उसे रिकार्ड पर नहीं आने दूंगा।

सुश्री मायावती–

मान्यवर, मैं तो ब्रह्मदत्त जी की इन्सानियत और मानवता की बात कह रही थी और उस दिन मानवता के नाते उन्होंने जो मेरी मदद की, उसे मैं जिन्दगी भर नहीं भुला सकती। मान्यवर, इतना ही नहीं मैं उनके व्यवहार के संबंध में एक और घटना बताना चाहती हूं कि उनके देहान्त होने से पहले जब उनकी बिटिया की शादी हुई.....

(समाजवादी पार्टी के एक सदस्य द्वारा खड़े होकर कुछ कहने पर व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

माननीय सदस्य आप कृपया बैठ जायं। निधन के निर्देश के समय आज एक अजीब माहौल पैदा किया जा रहा है ऐसा हमने पहले कभी नहीं देखा।

सुश्री मायावती–

जब उनकी बिटिया की शादी हुई तो वह मुझसे मिले उन्होंने कहा, कि बहन जी आपको मेरी बिटिया की शादी में जरूर आना है। मैंने ब्रह्मदत्त जी को यह बताया, कि मैं एक कार्यक्रम में व्यस्त हूं। इसलिए मैं नहीं आ पाऊंगी। उन्होंने बड़े गम्भीर होकर कहा, कि बहन जी मैं आपका बहुत आदर और सम्मान करता हूं और आपको सिस्टर मानता हूं और मेरी बिटिया का भी कहना है कि आप जरूर आयेंगी, यदि आप नहीं आयेंगी तो हम बारात ही वापस कर देंगे। यह था उनका मेरे प्रति स्नेह।

(मेजों की थपथपाहट)

श्री धनीराम वर्मा–

मान्यवर, शोक की इस घड़ी में माननीय सदस्य मेजों की थपथपाहट कर रहे हैं जो उचित नहीं है।

श्री अध्यक्ष–

ऐसे समय में मेजों की थपथपाहट नहीं होती ।

सुश्री मायावती–

आज ब्रह्मदत्त जी हमारे बीच में नहीं हैं परन्तु उनके कार्यों को भुलाया नहीं जा सकता । मान्यवर, मैं उनके परिवार के लोगों से मिली और उनसे कहा कि अब हमारी सरकार बन गयी है इसलिए अब आपको किसी प्रकार की परेशानी नहीं होगी । मुझे उनकी पत्नी श्रीमती प्रभा देवी ने रिक्वेस्ट की कि स्व० ब्रह्मदत्त जी जब मंत्री थे तो वह 11 माल एवेन्यू में रहते थे इसलिए इस मकान से हमारी भावनायें जुड़ी हुई हैं यद्यपि अध्यक्ष जी, हम इसे श्री राम पाल जी को एलाट कर चुके थे परन्तु जैसा ही मुझे यह मालूम पड़ा तो मैंने भी श्री राम पाल जी के पक्ष में जो यह भवन आवंटित हुआ था उसे कैन्सिल कर दिया । माननीय अध्यक्ष जी, मैं सदन को बताना चाहती हूं कि हम ब्रह्मदत्त जी के परिवार की हर तरह से मदद करेंगे उन्हें मदद देंगे और साथ ही प्रार्थना करती हूं कि उनकी आत्मा को शान्ति प्राप्त हो तथा उनके शोक संतप्त परिवार को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति प्राप्त हो । साथ में आप से भी निवेदन है कि हमारी यह संवेदनायें उनके शोक संतृप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री धनीराम वर्मा–

माननीय अध्यक्ष जी, आज हम एक ऐसे व्यक्ति के प्रति शोक संवेदना प्रकट करने के लिए खड़े हुए हैं जो हमारे पड़ोसी जनपद फर्रूखाबाद के रहने वाले थे । स्वर्गीय ब्रह्मदत्त जी से हमारे घनिष्ठ संबंध रहे हैं और यदा कदा हम लोग आपस में मिलते भी रहे हैं । मान्यवर, यह भी सत्य है कि जो जितना नजदीकी होता है उसको उतना ही कष्ट विछोह के समय होता है । स्वर्गीय ब्रह्मदत्त जी की सेवायें समाज के प्रति जो रही हैं चाहें वह साहित्य के क्षेत्र में क्यों न हो और चाहे वह राजनीति के क्षेत्र में क्यों न हो, निश्चित रूप से उन्हें भुलाया नहीं जा सकता । मान्यवर, वैसे तो दुनिया में लाखों लोग डेली पैदा होते हैं और इस संसार को छोड़कर भी चले जाते हैं लेकिन नाम उन्हीं का अमर होता है, उन्हीं का नाम इतिहास के स्वर्णाक्षरों में लिखा जाता है और उन्हीं की गाथायें समाज समय-समय पर गाता भी है जिसने समाज और देश के लिए कुछ किया होता है । स्वर्गीय ब्रह्मदत्त जी ने साहित्यकार के रूप में, समाज सेवी के रूप में और राजनीति के क्षेत्र में देश और प्रदेश की जो सेवा की है वह हमेशा अक्षुण रहेगी ।

मैं और मेरा दल स्वर्गीय ब्रह्मदत्त जी के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है और ईश्वर से हम प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शाश्वत शान्ति मिले और साथ ही साथ उनके परिवारजनों को असह्य दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करने की क्षमता प्रदान करें । उनका परिवार और उनके बच्चे स्वर्गीय ब्रह्मदत्त जी के नाम को अमर रखने के लिए प्रयत्नशील रहें । श्री ब्रह्म दत्त जी की पत्नी को ईश्वर ब्रह्मदत्त जी के नाम को अमर बनाये रखने में मदद करें । इन्हीं शब्दों के साथ मैं पुनः अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

* श्री कल्याण सिंह–

* माननीय अध्यक्ष जी, स्व० श्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी जी के निधन के संदर्भ में जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन और माननीय नेता विरोधी दल ने व्यक्त किये हैं उनके साथ मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। श्रीमन्, श्री द्विवेदी जी को क्रूर हाथों ने उनकी जघन्य हत्या करके हमसे छीन लिया है। बड़ा ही कायरतापूर्ण कार्य हत्यारों ने किया। इस कुकृत्य की जितनी भी कठोर शब्दों में भर्त्सना की जाये वह कम है। क्योंकि लोकतंत्र में हत्या और हिंसा का कोई स्थान नहीं होता है। आज श्री द्विवेदी जी हमारे बीच में नहीं हैं हम सभी मर्माहत हैं। उनकी इस प्रकार हत्या से सम्पूर्ण प्रदेश को झकझोर दिया है। इसका दुःख केवल उनके परिवार को नहीं है, दल के नाते, भारतीय जनता पार्टी के कर्मठ कार्यकर्ता के नाते ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण प्रदेश को है। वे एक जुझारू नेता थे और वर्षों तक साथ-साथ काम करने का उनके साथ अवसर मिला। उन्होंने अनेक विषय और विकट परिस्थितियों में साहस का परिचय दिया, अन्याय के विरुद्ध हमेशा संघर्ष किया, हर दमनचक्र के विरुद्ध संघर्ष किया, गरीब बेसहारा, दबे-कुचले लोगों के लिए वे सदैव जान हथेली पर रखकर आगे बढ़ते थे। राजनीति के बहुत सूक्ष्म विश्लेषक थे, बहुत अच्छे संगठनकर्ता थे। पार्टी के नाते जब भी ऐसा कोई दुरूह और दुष्कर कार्य सामने आया तो उन्होंने उस काम को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। उन्होंने जीवन भर निस्वार्थ सेवा की। राजनीतिक क्षेत्र में अपनी बहादुरी के आधार पर, अपने साहस के आधार पर और अपनी दबंगई के आधार पर छवि बनाई।

साहित्यिक क्षेत्र में भी उनकी अभिरुचि थी। वे कविताएं और लेख लिखा करते थे। मुझे याद है इसी विधान सभा के अन्दर जब मैं नेता सदन था, जब मुझे अपना भाषणा देना था तो उन्होंने हाथों-हाथ एक छोटी सी कविता लिखकर थमा दी और मैंने उसको पढ़ा भी था तो वे एक आशु कवि भी थे। ऐसे बहुआयामी और प्रतिभाशाली व्यक्तित्व आज हमारे बीच में नहीं है यह प्रदेश की एक महान क्षति है, जिसकी पूर्ति होना असंभव है। उनका जीवन हमें और आने वाली पीढ़ियों को अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करते रहने की प्रेरणा देता रहेगा। वे कभी झुके नहीं। बड़ी सी बड़ी विकट समस्याएं उनके सामने आयीं, लेकिन वे कभी झुके नहीं। उन्होंने सिद्धान्तों से कभी समझौता नहीं किया। ऐसे लोग जब हमारे बीच से उठते हैं तो एक बहुत बड़ा शून्य पैदा हो जाता है और उस शून्य की भरपाई कोई सहज काम नहीं रह जाता है। श्रीमन्, सी०बी०आई० द्वारा जांच रही है और मुझे पूरा विश्वास है कि इस जघन्य हत्या की जांच सी०बी०आई० निष्पक्षता के साथ करेगी। मान्यवर, इस जांच में साजिश करने वालों के चेहरे सामने आयेंगे और दूध का दूध पानी का पानी अलग हो जायेगा और उनकी हत्या की साजिश करने वाला रहा होगा या मौके पर हत्या करने वाला रहा हो, वह निश्चित रूप से कानून के शिकंजे से बच नहीं सकता है और उन हत्यारों को कड़ी से कड़ी सजा मिलेगी। उनके निधन से हम बहुत दुखी हैं। हमने एक सफल राजनेता खो दिया है।

श्रीमन्, इन शब्दों के साथ मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि स्वर्गीय ब्रह्मदत्त द्विवेदी जी की आत्मा को शान्ति प्रदान करे और साथ ही साथ उनके शोक संतप्त परिवार को इस गहरी क्षति को सहन

---

* वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया।

करने की क्षमता प्रदान करे, साहस प्रदान करे और मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि मेरी और मेरे दल की भावनाओं को उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

* श्री प्रमोद कुमार–

माननीय अध्यक्ष जी, माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल और माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी ने जो भावनायें स्वर्गीय ब्रह्मदत्त द्विवेदी जी के प्रति व्यक्त की हैं, उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, यह शाश्वत नियम है कि जो आता है, वह एक न एक दिन जाता अवश्य है, लेकिन कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जिनके जाने से सहसा विश्वास नहीं होता है। आज श्री द्विवेदी जी हमारे बीच नहीं रहे। उनका एक महान व्यक्तित्व था, जिसको किसी प्रकार से भुलाया नहीं जा सकता है, उसको भुलाना सहज और आसान नहीं है। मैं श्री द्विवेदी जी को एक लम्बे अर्से से जानता हूं वह चार विधान सभाओं में सदस्य रहे हैं। उनके व्यक्तित्व को समझना आसान नहीं है। वह एक इन्द्रधनुषी व्यक्ति थे।

मान्यवर, जिस प्रकार से इन्द्र धनुष में सात रंग होते हैं और वह एक दूसरे से जुड़े होते हैं और एक दूसरे को आकर्षित करते हैं, ठीक उसी प्रकार से स्वर्गीय द्विवेदी जी के जो गुण थे, वह एक दूसरे से जुड़े हुये थे और एक दूसरे से बढ़कर थे। उनकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती है। वह एक योग्य संसदीय ज्ञाता थे और एक योग्य प्रशासक के रूप में थे। मान्यवर, राजनीति में एक राजनीतिक दल के समर्पित कार्यकर्ता थे मैं यह कह सकता हूं कि दलों की प्रतिबद्धता अपने स्थान पर थी और वह एक सच्चे मित्र थे। उनकी निर्भीकता पर नाज था। वह निर्भीक पुरुष थे और जिसे मैं सबसे ज्यादा मूल्यवान समझता हूं, वह एक विधिवेत्ता के रूप में जाने जाते थे मान्यवर, इन सबको मिलाकर वह एक ऐसे व्यक्ति थे। जिसकी कमी को कभी पूरा नहीं किया जा सकता है। मान्यवर, मेरे पास शब्द नहीं हैं जिनके द्वारा मैं उनके बारे में कहूं। मैं किन शब्दों के साथ उनकी हत्या के बाद उनके परिवार वालों को इस हत्या को सहन करने के लिये कह सकूं। मान्यवर, लोकतंत्र में विचारों का आदान प्रदान होता है और कोई भी बात बैलेट के द्वारा तय होती है, बुलेट के द्वारा तय नहीं होती है। जिस व्यक्ति ने उनकी हत्या की है, उसने ब्रह्मदत्त द्विवेदी की हत्या नहीं की है, बल्कि विचारों की हत्या की है, जिसके लिये आने वाली पीढ़ी उनको कभी माफ नहीं करेगी। इन शब्दों के साथ में अपने और अपने दल की ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार को इस असीम दुख को सहन करने की शक्ति दे। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरी और मेरे दल की भावनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री कौकब हमीद–

मान्यवर, माननीय ब्रह्मदत्त द्विवेदी जी मेरे साथ 3 बार इस सदन के मेम्बर रहे और आज अजीब सा लग रहा है जब उनकी शक्ल उधर दिखाई नहीं दे रही है। उनका हंसता हुआ चेहरा, उनकी लाबी के अन्दर हंसी मजाक हमेशा याद रहेगा। जब भी उनसे मुलाकात होती उनका दोस्ताना व्यवहार रहता। उनकी हत्या से कुछ दिन पूर्व यू०पी० भवन में उनसे मुलाकात हुई और कहने लगे लखनऊ मुलाकात

---

* वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया।

नहीं होती तो मैंने कहा कैसे मुलाकात हो सदन चल नहीं रहा है, गवर्नर रूल खत्म हो और सदन चले तो मुलाकात हो । उसके चंद दिनों बाद अखबार में एक दिन मालूम हुआ कि उनकी हत्या हो गयी है । तो मान्यवर, उनकी हत्या जिस अंदाज में हुई है उससे आज इस पूरे सदन में हम सब लोगों की जिम्मेदारी बनती है अगर इस तरह से हत्यायें होती रही, तो आखिर शासनदां किस तरह अपनी बात कहेंगे । इस पर गम्भीरता से कोई निर्णय लेना होगा इस पर चर्चा कर सोचना पड़ेगा, कि इस तरह की हत्याओं को किस तरह से रोका जाय ? इन शब्दों के साथ मैं अपने और अपने दल की ओर से आपसे गुजारिश करता हूं कि उनके शोक-संतप्त परिवार तक संवेदना पहुंचाने का कष्ट करें ।

*श्री राम आसरे पासवान–

माननीय अध्यक्ष महोदय, आदरणीय नेता सदन, आदरणीय नेता विरोधी दल, आदरणीय नेता भारतीय जनता पार्टी, आदरणीय नेता कांग्रेस पार्टी, आदरणीय नेता किसान कामगार पार्टी ने माननीय ब्रह्मदत्त द्विवेदी के निधन पर जो शोक संवेदना व्यक्त की है उससे मैं अपने और अपने दल को संबद्ध करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि उनके शोक-संतप्त परिवार तक हमारी और हमारे दल की संवेदना भेजने का कष्ट करें ।

श्री राम जग–

अध्यक्ष जी, सदन के नेता, नेता विरोधी दल, नेता भा०ज०पा०, नेता कांग्रेस, नेता किसान कामगार पार्टी, नेता जनता दल ने माननीय ब्रह्म दत्त द्विवेदी के निधन पर जो संवेदना व्यक्त की, उससे हम अपने और अपने दल को संबद्ध करते हैं । माननीय ब्रह्मदत्त जी को देखा नहीं था लेकिन अखबारों में उत्तर प्रदेश की राजनीति में जो पढ़ने को मिलता रहता था वह भारतीय जनता पार्टी के बड़े नेताओं में से थे और उस रूप में हम उनको जानते थे । ब्रह्मदत्त द्विवेदी जी एक योग्य व्यक्ति थे, राजनीति में बहुत ही सुलझे हुये व्यक्ति थे, वह लेखक और कवि भी थे । उत्तर प्रदेश की राजनीति में उनका बड़ा नाम था । ऐसे कुशल व्यक्ति को हत्यारों ने हमेशा के लिये हमारे बीच से ले लिया । राजनीति में हत्या की कोई महत्व नहीं है । आतंकवादी और हत्यारे किसी के नहीं होते हैं । हत्या का राजनीति में कोई स्थान नहीं होता है । माननीय ब्रह्मदत्त द्विवेदी को पूरा प्रदेश उनके कामों से, उन्होंने जो जनता की सेवा की है उसको कभी भुला नहीं सकता है । उ०प्र० की राजनीति में जैसा उनके बारे में सुन रहे हैं अगर वह जीवित होते तो सीखने का मौका मिलता वह इस विधान सभा के सदस्य रहे, हत्यारों ने उनकी हत्या कर दी । ऐसे प्रिय नेता जो भारतीय जनता पार्टी के जाने माने नेता थे आज हमारे बीच से हमेशा के लिये चले गये । मैं अध्यक्ष जी से अनुरोध करता हूं कि कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) की ओर से और हमारी ओर से उनके शोक-संतप्त परिवार तक हमारी शोक-संवेदनाओं को पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री अध्यक्ष–

अखिल भारतीय तिवारी कांग्रेस की ओर से यदि कोई सम्मानित सदस्य बोलना चाहे तो बोले ।

*श्री रघुबर दयाल वर्मा–

मान्यवर, माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी और माननीय अन्य दलों के नेताओं ने जो मार्मिक संवेदनायें आदरणीय ब्रह्मदत्त द्विवेदी के प्रति व्यक्त की हैं उनमें मैं अपने को और अपने दल को संबद्ध करता हूं। मान्यवर, संवेदना के रूप में 2-3 बातें मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। स्वर्गीय द्विवेदी जी से मेरा भी बहुत लम्बे समय तक संबंध रहा है। राजनीतिक पंडित के रूप में मेरी उनकी पहचान जब वह भारतीय जनसंघ के कार्यकर्ता थे और मैं सोशलिस्ट पार्टी का कार्यकर्ता था तो हम दोनों का संगम फर्रूखाबाद की एक आम सभा में हुआ था और तब से लेकर जय प्रकाश जी के आंदोलन में, जिसमें भारतीय जनसंघ और सोशलिस्ट पार्टी ने मिलकर काम किया था और जनता पार्टी का निर्माण हुआ था तब से हम एक दूसरे से परिचित रहे हैं। उन्होंने जयप्रकाश जी के आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभायी और उनके साथ मुझे काफी समय तक काम करने का अवसर मिला है। श्रीमन्, वह बहुत ही सरल स्वभाव के बहुत ही पवित्र हृदय के व्यक्ति थे। उनके मन में मित्रता का भाव सदैव रहता था। राजनीतिक प्रतिबद्धता पार्टियों के प्रति हुआ करती है लेकिन इन सबके बावजूद मानवता की श्रृंखला में वह अग्रिम पंक्ति में थे। जब भी मनोविनोद की बात होती थी, हंसी के बीच व्यंग्यात्मक भाषा में जिस तरह से वह हमारे मन को मुग्ध कर लेते थे उसकी मिसाल नहीं है। श्रीमन्, राजनीति में जिस तरह से हत्यायें भीषण रूप धारण कर ही हैं वह अत्यन्त दुखद है। उत्तर प्रदेश की राजनीति में ब्रह्मदत्त द्विवेदी जी एक नयी गठजोड़ की राजनीति में अग्रणी भूमिका अदा कर रहे थे। उनकी सोच और विचार से आज उत्तर प्रदेश लाभान्वित हुआ है। श्रीमन् ऐसे महान व्यक्ति को आज हमारे बीच से क्रूर हाथों ने छीन लिया है। ऐसे लोग राजनीति हत्यायें करके कायरता का काम करते हैं। क्रूर हाथों ने हमारे बीच से एक ऐसे व्यक्ति को उठा लिया जो प्रदेश के गरीबों के प्रति समर्पित था। आज हमारे बीच से हमारे योग्य साथी स्वनामधन्य श्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी जी को जिस तरह से क्रूर हाथों ने उठा लिया वह हम सबके भारी वेदना और दुख का विषय है। श्रीमन्, मैं निवेदन करूंगा कि हमारी ओर से तथा हमारे दल की ओर से शोक-संवेदनाओं को उनके परिवार तक भेजने की कृपा करें।

*श्री राजेन्द्र सिंह–

माननीय अध्यक्ष जी, माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी, आज हमारे बीच से, योग्य प्रशासक, गरीबों के हमदर्द स्वर्गीय ब्रह्मदत्त द्विवेदी जी हमारे बीच में नहीं हैं। इसको हमको बेहद कष्ट है। मैं माननीय नेता विरोधी दल वर्मा जी ने जो विचार व्यक्त किये हैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं। आपसे मेरा निवेदन है कि उनके परिवार तक हमारी शोक-संवेदनाओं को पहुंचाया जाय। दूसरी तरफ उनके शोक-संतप्त परिवार को मानिक शान्ति प्रदान करें तथा इस कष्ट को सहने की सहनशक्ति प्रदान करें। इन्हीं सब शब्दों के साथ माननीय अध्यक्ष जी उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान हो।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया।

* श्री बनवारी लाल दोहरे–

मान्यवर, माननीय द्विवेदी जी हमारे जिला फर्रूखाबाद के अग्रिम पंक्ति के नेता थे । मान्यवर, उस दिन 7/8 घंटे पहले विधायकों की आर०ई०एस० बंगले में एक बैठक थी । उस बैठक में उन्होंने अगुवाई की थी । कुछ महत्वपूर्ण निर्णय हुए थे वहां से कप्तान साहब, कलेक्टर साहब से भेंट करने के लिये गये । कप्तान साहब मिले नहीं । कलेक्टर साहब से कुछ बातें हुईं, तो कलेक्टर साहब ने कहा, कि मान्यवर, आपको तो वकील होना चाहिए इस पर हम लोगों ने कहा कि यह डिस्ट्रिक्ट फर्रूखाबाद के वरिष्ठ अधिवक्ता हैं और भी कुछ बातें हुईं । श्रीमन् उनको राम जी अग्रवाल के यहां तिलक में जाना था । वह उधर रवाना हुए और हम लोग कन्नौज की ओर । चार-साढ़े चार घंटे बाद फोन से सूचना मिली, कि उनकी हत्या कर दी गई । श्रीमन्, द्विवेदी जी हमारे जिले के, हम सब के संरक्षक थे । सदैव चिन्ता करते थे यही नहीं चुनाव के समय में सदैव यही पूछा करते थे । हमारे चेले विधायक, हमारे शिष्य जीत जायेंगे ? उनके न रहने से हमारी पार्टी के लोग यही कहते हैं कि हम अनाथ हो गये हैं । ऐसे नेता को हम सब ने खोया है । हम सब दुःखी हैं हमारी शोक-संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

*श्री अवधेश प्रसाद–

माननीय अध्यक्ष जी, आदरणीय ब्रह्मदत्त द्विवेदी जी के सम्मान में माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल और माननीय नेता, भारतीय जनता पार्टी और माननीय नेता अखिल राष्ट्रीय कांग्रेस और अन्य माननीय नेताओं ने जो अपनी भावना व्यक्त की है मैं उससे अपने को सम्बद्ध करता हूं । मान्यवर, आदरणीय द्विवेदी जी कल इस आदरणीय सदन के सदस्य थे । आज वह हमारे बीच नहीं हैं । आज पूरा सदन उनके न रहने से दुःखी है । मान्यवर, माननीय द्विवेदी जी को मैं कई वर्षों से जानता था और चार बार इस आदरणीय सदन में उनके साथ रहने का मौका मिला हैं । आदरणीय द्विवेदी जी के न रहने से केवल भारतीय जनता पार्टी का ही नुकसान नहीं हुआ है बल्कि उनके न रहने से इस प्रदेश की महान क्षति हुई है । उनके निधन पर जो विचार आदरणीय सदन में आये हैं उसी भाव से भी आने चाहिए । मान्यवर, आदरणीय द्विवेदी जी इस प्रदेश के राजस्व मंत्री के रूप में रहे थे । इस प्रदेश में विद्युत का बड़ा संकट आया, लेकिन जिस कर्मठता के साथ उन्होंने परिचय दिया है उसका यह प्रदेश हमेशा ऋणी रहेगा । मान्यवर, हमने इस आदरणीय सदन में यह भी देखा है कि कभी-कभी कई विभागों का जवाब अपने आप देते थे । यह इस बात का द्योतक है कि वह कितने विद्वान थे और उनकी जो सूझ-बूझ थी बहुत अच्छी थी । आज उनके निधन पर मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी पत्नी आदरणीय प्रभावती जी जो इस आदरणीय सदन की सम्मानित सदस्य हैं

श्री अध्यक्ष–

मंत्रि-परिषद् की सदस्य है ।

जो प्रदेश की मंत्री हैं, मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनको इतनी ताकत दे, कि वह इस दुख को सह सकें और जिस तरह से द्विवेदी जी इस प्रदेश की सेवा करते रहे, अपने कार्यकर्ताओं का सम्मान करते रहे, अपने क्षेत्र की समस्याओं को उजागर करते रहे उसी तरह से आदरणीय श्रीमती द्विवेदी जी, जो इस प्रदेश की मंत्री हैं वह उसी तरह से उनके पदचिन्हों पर चलते हुए कार्य करेंगी, जिससे आदरणीय

* वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया ।

द्विवेदी जी की कमी न समझी जा सके। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं, कि उनके शोक-संतप्त परिवार को यह दुख सहने की शक्ति प्रदान करे और आपसे यह निवेदन करता हूं कि हमारी भावनाओं को उनके परिवार तक, उनके कार्यकर्ताओं को और उनकी पत्नी को उनके बच्चों को पहुंचाने की कृपा करें।

श्री छोटे सिंह यादव–

माननीय ब्रह्मदत्त द्विवेदी जी के साथ अलग-अलग राजनीतिक दल में होने पर भी सबसे ज्यादा काम करने का मौका मिला। 1967 में सबसे पहले ब्रह्मदत्त द्विवेदी जी ने मेरे नाम का प्रस्ताव जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष के लिए करके मुझे अध्यक्ष बनवाया। वह वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में भी दिखाई दिए मैंने उनके अण्डर में रहकर वकालत का काम किया। वह योग्य, दक्ष विद्वान कर्मठ, निर्भीक और बहादुर व्यक्ति थे और इन सभी सीमाओं में रहते थे। वह दूसरे लोगों के प्रति अच्छी भाषा और अच्छे भाव प्रकट करने में कुशल थे। स्वर्गीय द्विवेदी जी की सबसे बड़ी विशेषता और योग्यता यह थी कि वह अपनी विरोधियों से भी बहुत मीठी भाषा बोलते थे। फर्रूखाबाद के विकास के लिए जो द्विवेदी जी ने किया वह भुलाया नहीं जा सकता है। वर्तमान विषाक्तपूर्ण वातावरण में ब्रह्मदत्त द्विवेदी जी की नकल करनी चाहिए। कई अवसर ऐसे आए और एक अवसर तो ऐसा आया जब हम एक दूसरे के विरोध में लोकसभा का चुनाव लड़ रहे थे, लेकिन सुबह शाम जब कभी तो हंसकर एक दूसरे का हाल पूछते। इस गन्दी राजनीति के माहौल में जो पवित्र राजनीतिक वातावरण बनाने की कला उन्होंने निकाली हम सबको उनसे सीख लेनी चाहिए। ब्रह्मदत्त जी की हत्या में किसका हाथ है, हत्यारा कौन है फर्रूखाबाद का बच्चा-बच्चा दुखी है। सी०बी०आई० घटना की जांच कर रही है। जन-जन की जुबान पर हत्यारों के प्रति घृणा का बोलबाला है। मैं ईश्वर से विनती करता हूं स्वर्गीय ब्रह्मदत्त द्विवेदी जी आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा उनके परिवार जनों तथा उनके साथियों को गहरा दुख सहने की शक्ति दे।

श्री हरीशचन्द्र "हरीश जी"–

माननीय अध्यक्ष महोदय, यह अत्यन्त ही दुख का विषय है कि आज इस सदन के एक सम्मानित सदस्य मा० ब्रह्मदत्त द्विवेदी हम सबके बीच नहीं हैं। उनकी उपस्थिति से सदन का वातावरण इतना उत्साहित, प्रफुल्लित और शिक्षाप्रद बन जाता था। आज ऐसे नेता के खो जाने पर हम उनके प्रति अपनी संवेदना और श्रद्धांजलि प्रकट कर रहे हैं। मैं जिस समय उत्तर प्रदेश भारतीय जनसंघ का महामंत्री था उस समय फर्रूखाबाद जाया करता था। स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद विधि वेत्ता के रूप में वह फर्रूखाबाद कचेहरी में जिस तरह से लोगों के बीच अपनी कर्मठता, अपने उज्जवल चरित्र और निर्भीकता के कारण जिस तरह से विद्यार्थी जीवन में अपना स्थान बनाया था उसी प्रकार उन्होंने इस पेशे में भी स्थान बनाया। लेकिन समाज सेवा उनके स्वभाव में था। वह लोकप्रिय बनते गए और भारतीय जनसंघ व भारतीय जनता पार्टी के माध्यम से इस विधान सभा के माननीय सदस्य भी बने और शासन में एक अच्छे और कुशल मंत्री के रूप में उन्होंने ख्याति प्राप्त की उनकी आवश्यकता जब बहुत थी। मौत के क्रूर हाथों ने उनको हमसे छीन लिया। उनकी मौत से हम सब बहुत मर्माहत हुए। मान्यवर, सी०बी०आई० जांच इस संबंध में चल रही है। किन लोगों ने साजिश की किन हाथों ने उनकी हत्या की उसका पता तो जांच के बाद ही चल पाएगा। लेकिन उनकी हत्या करने वाले, व हत्या की

साजिश करने वालों को गम्भीर दंड मिले, इससे सबको शांति प्राप्त होगी। हिंसा की राजनीति समाप्ति उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि भी होगी।

मान्यवर, एक बात और कहना चाहूंगा आज उनकी धर्मपत्नी यहां पर उपस्थित हैं मंत्रि-परिषद् के सदस्य के रूप में, इसलिए हमारे साथी ने जैसा कहा कि वह अपनी सेवा कर्मठता और लोगों से मिलकर उनके दुख दर्द को दूर करते थे तभी उसी प्रकार प्रभावी कार्यशैली से इस क्षति की पूर्ति हो जाएगी। जो नेता सदन, नेता विरोधी दल ने, नेता भारतीय जनता पार्टी ने और अन्य माननीय नेताओं ने जो अपनी संवेदना प्रकट की है, उनके प्रति भाव व्यक्त किए हैं उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि मेरी भी भावनाओं को उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री गौरी शंकर (एडवोकेट)–

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे इस अवसर पर शोक प्रकट करने का अवसर दिया। आज यह पूरा माननीय सदन स्तब्ध और शोक संतप्त है और ब्रह्मदत्त द्विवेदी जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है। श्री ब्रह्मदत्त जी हमारे भी मित्र थे इसलिए मैंने व्यक्तिगत रूप से अनुरोध किया कि मुझे भी दो शब्द कहने हैं। ब्रह्मदत्त द्विवेदी जी चार बार हमारे साथ रहे। मेरा यह छठा टर्म हैं। मैं उनसे पहले आया था। आज मैं इस सदन में उपस्थित हूं लेकिन वह हमें बीच में छोड़ कर चले गए। कई अवसरों पर मुझे उनके साथ काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। उनके परिवार के साथ मेरा निकट का रिश्ता रहा है। जनपद फर्रूखाबाद व इटावा जनपद के पास पास होने के कारण राजनीतिक गतिविधियां भी हम दोनों लोगों की साथ-साथ चलती रही। मुझे याद है कि जब मैं फर्रूखाबाद जनपद का प्रभारी मंत्री था 20 सूत्रीय कार्यक्रम का व राजस्व मंत्री था। उस समय गंगा पार क्षेत्र के उनके इलाके पानी के बहाव से कट जाते थे इस संबंध में उन्होंने मुझसे व्यक्तिगत रूप से कहा, उनके अनुरोध पर मैंने बाकायदा 20 सूत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत एक बहुत बड़ा बजट इस समस्या के निराकरण के लिए एलाट किया। यह उनका स्वभाव था कि वह हमेशा क्षेत्र की बातें राजनीतिक व्यक्तियों से करते रहते थे। मान्यवर, मुझे मैथिलीशरण गुप्त की एक पंक्ति याद आती है कि–

"हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे वृथा जिए।
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए॥
यही पशुप्रवृत्ति है जो आप आप ही चरे।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥"

श्री द्विवेदी जी में मानवता कूट-कूट कर भरी थी किन्तु आज वह हमारे बीच नहीं है। उनके न रहने का अफसोस हम सबको है। मान्यवर, गीता का एक श्लोक उद्धृत करता हूं :–

"वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा
न्यन्यानि संयाति नवानि देही॥"

जिस प्रकार हम सब पुराने वस्त्रों को त्याग कर नये वस्त्र धारण करते हैं उसी प्रकार आत्मा पुराने शरीर को छोड़कर नया शरीर धारण करती है। क्रूर हाथों ने हमारे साथी को हमसे छीना है, इसलिए हम सब बहुत दुखी हैं। मेरा आपसे निवेदन है कि मेरी शोक-संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें और प्रभु से प्रार्थना है कि उनकी पुण्य आत्मा को शान्ति मिले।

* श्री सरवर अली खां–

माननीय अध्यक्ष जी, मा० नेता सदन, नेता विरोधी दल, सम्मानित नेता भारतीय जनता पार्टी, नेता भारतीय कांग्रेस पार्टी, सदन के सभी उपस्थित सम्मानित साथियों, आज बड़े दुःख का विषय है कि हम सब एक ऐसे महापुरुष और राजनीतिज्ञ की दुनिया से विदायी के अवसर पर शोक प्रकट कर रहे हैं। सभी सम्मानित सदस्यों ने जिस प्रकार से उनका जीवन परिचय संक्षिप्त रूप में इस सदन के सामने रखा। इस बात का दुख जरूर है कि उनके साथ कार्य करने का अवसर नहीं मिला। लेकिन समाचार पत्रों और राजनीतिक पटल पर इस प्रदेश में जिस सूझबूझ और जागरूकता के साथ उन्होंने जनसेवा की है वह अपने में एक मिसाल है। यूं तो संसार में बहुत से लोग पैदा होते हैं और चले जाते हैं लेकिन कुछ ऐसे होते हैं जिनके जाने पर आदमी न चाहते हुए भी दुखी होने पर विवश होता है। वह एक ऐसे समाजसेवी थे जिन्होंने समाज को एक नई दिशा दी। आज वह हमारे बीच नहीं है। माननीय अध्यक्ष जी, मेरा आपसे निवेदन है कि मेरी शोक संवेदनायें एवं श्रद्धा सुमन उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें और ईश्वर से प्रार्थना है कि उनको धैर्य और साहस इस अपार दुःख को सहन करने का दे।

* स्वामी ओइमवेश–

माननीय अध्यक्ष जी, माननीय नेता सदन, मा० नेता विरोधी दल, मा० नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मेरे सम्मानित सदस्यगण, इससे पहले कि मैं ब्रह्मदत्त द्विवेदी जी के बारे में अपने विचार रखूं, मैं उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और जितने भी माननीय नेताओं ने माननीय ब्रह्मदत्त द्विवेदी के लिए जो अपने हृदय उदगार प्रकट किये हैं मैं उनसे अपने आपको सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, मैंने मा० द्विवेदी जी को देखा नहीं है और न उनसे मेरी कभी बात हुई है। लेकिन उनके बारे में जो नेताओं ने अपनी बात कही हैं उससे अंदाजा लगता है कि मा० द्विवेदी जी एक महान हस्ती थे और उनकी जिन क्रूर हाथों ने हत्या की है वह हत्यारे नहीं बल्कि क्रांतिकारी विचारों और क्रांतिकारी व्यक्तित्व की हत्या की है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें अपने प्रदेश में पुनः जन्म देकर एक बार फिर जनता की सेवा करने का अवसर प्रदान करें। मान्यवर, इसके साथ ही साथ मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार वालों को शांति प्रदान करे और हम सभी को तथा उनके परिवार वालों को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। मा० अध्यक्ष महोदय मेरी भावना को उनके परिवार तक पहुंचाने की आप कृपा करें।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया।

श्री अध्यक्ष–

अभी बहुत से माननीय सदस्य श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहते हैं लेकिन हमारे पास समय की एक सीमा है और इसके पश्चात् भी अनेक पूर्व सदस्य हैं जिनके प्रति निधन के निर्देश देने हैं। इसलिए हम श्री चन्द्र किशोर को छोड़कर, जिनका नाम आ गया है, अन्य मा० सदस्यों से क्षमा चाहते हैं।

* श्री चन्द्र किशोर–

मा० अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मैं आदरणीय ब्रह्मदत्त द्विवेदी जी, जो हम सभी के वरिष्ठ नेता थे, के संबंध में बताना चाहता हूं कि पहली बार हम लोग उनके सम्पर्क में 1993 में आये थे तो जो भी छोटी बड़ी समस्यायें जिले की रहा करती थीं उनके संबंध में उनसे सुझाव लिया करते थे और उनसे सहयोग लिया करते थे। हम लोग जो नये सदस्य थे उन सभी को वह पूरा-पूरा बराबर सहयोग देते थे और हम लोगों की समस्याओं को वह बराबर पार्टी में उठाने का कार्य किया करते थे। उनके न रहने से हम सभी एक तरह से अपने को बहुत ही अनाथ महसूस कर रहे हैं। जिसने भी यह कायरतापूर्वक कार्य किया है उसकी जितनी भी निन्दा की जाये वह कम है। मैं उनकी आत्मा की शांति के लिये ईश्वर से प्रार्थना करता हूं और उनके परिवार वालों को यह दुख सहन करने की शक्ति दे। मान्यवर, हमारी संवेदनायें उनके परिवार वालों तक पहुंचाने की आप कृपा करें।

श्री चन्द्र नाथ सिंह–

मा० अध्यक्ष महोदय, आज पूरा सदन और पूरा प्रदेश दुखमय है कि हम एक बहुत बड़े नेता को खो चुके हैं और इसलिये हम सभी लोग आज यहां उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। लेकिन वास्तव में उनको श्रद्धांजलि तभी अर्पित हो सकेगी, जब उनके हत्यारों की सदन निन्दा करें और हत्यारों को संरक्षण देने वाले राजनीतिक दलों की भी निन्दा करें, चाहे उनका दल हो या कोई दूसरा हो, उसकी भी निन्दा की जानी चाहिये। मैं कहना चाहता हूं कि ब्रह्मदत्त जी की हत्या एक राजनैतिक षडयंत्र के तहत, रास्ते से हटाने के लिये की गई है। उनकी हत्या दो बड़े राजनीतिक दलों के लोगों ने कराई है। जिन्होंने हत्या की है, उनकी अभी उन्हीं की पार्टी ने अपने दल से निकाला नहीं है न ही उसकी निन्दा की है। मैं मांग करता हूं कि सदन उनके खिलाफ निन्दा का प्रस्ताव पारित करे, धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष–

माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी, माननीय नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, एवं सभी राजनीतिक दल, जिनका प्रतिनिधित्व इस सदन में है, उनके माननीय नेतागण एवं माननीय सदस्यगण। आज इस सदन का वातावरण बहुत बोझिल है। श्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी जी की निर्मम हत्या का दुख और पीड़ा हम सब महसूस कर रहे हैं। मैं व्यक्तिगत रूप से श्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी को बहुत वर्षों से जानता था, राजनैतिक दल के कार्यकर्ता के रूप में, कुशाग्र बुद्धि वाले कुशल और सफल अधिवक्ता के रूप में, एक राजनेता के रूप में, एक इन्सान के रूप में और अपने अन्दर

---

* वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया।

कवि का हृदय छिपाये हुये एक अनूठे व्यक्तित्व के रूप में । आज इस सदन में माननीय नेताओं और अन्य माननीय सदस्यगणों ने श्री द्विवेदी के प्रति जो विचार और भावनायें व्यक्त की हैं, मैं उससे अपने को सम्बद्ध करता हूं । उसके साथ मात्र इतना कहना चाहता हूं कि स्वर्गीय श्री द्विवेदी निर्भीकता और निडरता की प्रतिमूर्ति थे और जब उनकी प्रतिभा का प्रखर प्रदर्शन सामने आ रहा था, उनके सामने आ रहा था, उनके भविष्य और अधिक उज्जवल दिखाई पड़ रहा था, उस समय किन्हीं लोगों ने उनकी हत्या कर दी । आज उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रभा द्विवेदी प्रदेश मंत्रि-परिषद् की सदस्य हैं, उनके राजनीतिक और सामाजिक व्यक्तित्व को संवारने, सजाने में उनका भी बड़ा योगदान रहा है । श्री द्विवेदी जी के लिये वह एक प्रकार से शक्ति का श्रोत थीं । हम सब बहुत भारी मन से आज उनको श्रद्धांजलि दे रहे हैं । मैं आप सबके द्वारा व्यक्त की गई भावनाओं को उनके परिवार तक पहुंचाऊंगा । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें और उनके परिवारजनों को और हम सभी को इस दुख को सहन करने की शक्ति दे । हम सब दो मिनट के लिये मौन खड़े होकर स्वर्गीय श्री द्विवेदी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे ।

(दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए सभी सदस्य सदन में दो मिनट के लिए मौन खड़े हुये ।)

श्री अध्यक्ष–

कृपया आसन ग्रहण करें ।

विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य सर्वश्री बनवारी राम, लखपत राम शर्मा, सूर्य प्रसाद अवस्थी, श्रीष चन्द्र अग्रवाल, मोहम्मद असरार अहमद, रामपाल सिंह, अब्दुल रऊफ खारी, मदन पाण्डेय, मोतीलाल अवस्थी, श्री लक्ष्मी शंकर यादव, श्री परिपूर्णानन्द वर्मा, मो० शफीउर्रहमान अंसारी, श्री खुशहाल सिंह रांगण, श्रीमती गंगा देवी बिशारद, त्रेपेन सिंह नेगी, रफीक अहमद खां, मारकण्डेय सिंह, नवरंग लाल, मन्नू लाल द्विवेदी, ओम प्रकाश पासवान, राम स्वरूप, विजय पाल सिंह, राघवेन्द्र सिंह, करन सिंह यादव, अमरेश चन्द्र पाण्डेय, नेक राम शर्मा, शिवबक्ष सिंह राठौर, जवाहर यादव, सतीश भाटिया, सईद मुर्तजा, शिवनाथ काटजू, बाबू लाल, कुसुमेश , हनुमान प्रसाद मिश्र, काजी जलील अब्बासी, मरगूब अहमद खां, श्रीमती सुखरानी देवी, सर्वश्री बाबा राम आधार यादव, जंग बहादुर पटेल सिंह , जगदीश शरण रस्तोगी, दाऊ दयाल खन्ना, भगवान दास बरनवाल, रामराज शुक्ल, लक्ष्मी रमण आचार्य, श्रीमती जदुरानी, सर्वश्री अकबर हुसैन बाबर, चद्र भान सिंह, दधीचि सिंह, श्रीमती पद्मा सेठ, सर्वश्री बाबू लाल सरोज, राजा बहादुर पशुपति नाथ शरण सिंह, डा० रामजी लाल सहायक, तथा वीरेन्द्र प्रताप शाही के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मंत्री (सुश्री मायावती)–

मान्यवर जी, मुझे अत्यन्त खेद के साथ सदन को सूचित करना पड़ रहा है कि पिछले सत्र के बाद हमारे बीच से कई माननीय भूतपूर्व सदस्य नहीं रहे हैं जिन्होंने विधान सभा के सदस्य के रूप में अन्य सदनों के सदस्य के रूप में और मंत्री के पद पर रह कर देश और समाज की सेवा की है । इनमें से

कई लोग स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, वकील थे, कवि थे और सामाजिक और शिक्षा संस्थाओं से जुड़े हुए थे। जैसे श्री बनवारी राम जी, यह भदोही जिले के रहने वाले थे। इनका देहान्त 22-7-95 को हुआ। स्वर्गीय श्री लखपत राम शर्मा जी, यह झांसी के रहने वाले थे इनका देहान्त 18-8-95 को हुआ। स्वर्गीय श्री सूर्य प्रसाद अवस्थी जी, यह कानपुर जिले के रहने वाले थे, इनका देहान्त 20-8-95 को हुआ। श्री श्रीश चन्द्र अग्रवाल जी, ये हरदोई जिले के रहने वाले थे, इनका देहान्त 29-8-95 को हुआ। स्वर्गीय श्री मोहम्मद असरार अहमद जी यह बदायूं जिले के रहने वाले थे, इनका देहान्त 1-9-95 को हुआ। स्वर्गीय श्री राम पाल सिंह जी, यह मुजफ्फरनगर नगर के रहने वाले थे इनका देहान्त 13-9-95 को हुआ। स्वर्गीय श्री अब्दुल रऊफ लारी जी, यह महराजगंज जिले के रहने वाले थे, इनका देहान्त 27-9-95 को हुआ। स्वर्गीय श्री मदन पाण्डेय जी, यह गोरखपुर जिले के रहने वाले थे इनका देहान्त। 18-10-95 को हुआ। स्वर्गीय श्री मोती लाल अवस्थी जी, यह कानपुर (नगर) के रहने वाले थे, इनका देहान्त 17-10-95 को हुआ। स्वार्गीय श्री लक्ष्मी शंकर यादव जी, ये जौनपुर जिले के रहने वाले थे, इनका देहान्त 20-10-95 को हुआ। स्वर्गीय श्री परिपूर्णानन्द वर्मा जी, ये कानपुर जिले के रहने वाले थे, इनका देहान्त 7-12-95 को हुआ। स्वर्गीय श्री मोहम्मद सफीउर्रहमान अंसारी जी ये वाराणसी जिले के रहने वाले थे, इनका देहान्त 29-12-95 को हुआ। स्वर्गीय श्री खुशहाल सिंह रांगण जी, ये टिहरी गढ़वाल जिले के रहने वाले थे, इनका देहान्त 9-1-96 को हुआ। स्वर्गीय श्रीमती गंगा देवी विशारद, यह बिजनौर जिले की रहने वाली थी, इनका देहान्त 11-1-96 को हुआ। स्वर्गीय श्री त्रेपन सिंह नेगी जी, यह टिहरी गढवाल जिले के रहने वाले थे, इनका देहान्त 3-2-96 को हुआ। स्वर्गीय श्री रफीक अहमद खां, यह बरेली जिले के रहने वाले थे इनका देहान्त 20-2-96 को हुआ। स्वर्गीय श्री मारकण्डेय सिंह जी, ये बलिया जिले के रहने वाले थे, इनका देहान्त 2-3-96 को हो गया। स्वर्गीय श्री नवरंग लाल जी बरेली के रहने वाले थे उनका देहान्त 10-3-96 का हुआ। स्वर्गीय श्री मन्नू लाल द्विवेदी जी रायबरेली के रहने वाले थे उनका देहान्त 13-3-96 को हुआ। स्वर्गीय श्री ओम प्रकाश पासवान जी गोरखपुर के रहने वाले थे उनका देहान्त 25-3-96 को हुआ। स्वर्गीय श्री राम स्वरूप जी सोनभद्र के रहने वाले थे और उनका देहान्त 2-5-96 को हुआ। स्वर्गीय श्री विजय पाल सिंह जी मुज्जफरनगर के रहने वाले थे उनका देहान्त 6-5-96 को हुआ। स्वर्गीय श्री राघवेन्द्र सिंह जी उन्नाव के रहने वाले थे उनका देहान्त 5-6-96 को हुआ। स्वर्गीय श्री करन सिंह यादव जी बदायूं रहने वाले थे उनका देहान्त 27-6-96 को हुआ। स्वर्गीय श्री अमरेश चन्द्र पाण्डेय जी मिर्जापुर के रहने वाले थे उनका देहान्त 30-7-96 को हुआ। स्वर्गीय श्री नेक राम शर्मा जी अलीगढ़ के रहने वाले थे उनका देहान्त 4-8-96 को हुआ। स्वर्गीय श्री शिववक्ष सिंह राठौर जी मैनपुरी के रहने वाले थे उनका देहान्त 10-8-96 का हुआ। स्वर्गीय श्री जवाहर यादव जी इलाहाबाद के रहने वाले थे उनका देहान्त 13-8-96 को हुआ। स्वर्गीय श्री सतीश भाटिया जी लखनऊ के रहने वाले थे उनका देहान्त 25-9-96 को हुआ। स्वर्गीय श्री सईद मुर्तजा मुज्जफरनगर के रहने वाले थे उनका देहान्त 30-9-96 को हुआ। स्वर्गीय श्री शिवनाथ काटजू जी इलाहाबाद के रहने वाले थे उनका देहान्त 9-10-96 को हुआ। स्वर्गीय श्री बाबू लाल कुसुमेश जी बाराबंकी के रहने वाले थे उनका देहान्त 10-10-96 को हुआ।

स्वर्गीय श्री हनुमान प्रसाद मिश्र जी सीतापुर के रहने वाले थे उनका देहान्त 31-10-96 को हुआ ।
स्वर्गीय श्री काजी जलील अब्बासी जी सिद्धार्थनगर के रहने वाले थे उनका देहान्त 7-11-96 को हुआ ।
स्वर्गीय श्री मरगूब अहमद खां जी बाराबंकी के रहने वाले थे उनका देहान्त 9-11-96 को हुआ ।
स्वर्गीय श्रीमती सुखरानी देवी फतेहपुर की रहने वाली थी उनका देहान्त 19-11-96 को हुआ ।
स्वर्गीय श्री बाबा राम अधार यादव जी इलाहाबाद के रहने वाले थे उनका देहान्त 21-11-96 को हुआ ।
स्वर्गीय जंग बहादुर सिंह पटेल जी इलाहाबाद के रहने वाले थे उनका देहान्त 25-11-96 को हुआ ।
स्वर्गीय श्री जगदीश शरण रस्तोगी जी मुरादाबाद के रहने वाले थे उनका देहान्त 3-12-96 को हुआ ।
स्वर्गीय श्री दाऊ दयाल खन्ना जी मुरादाबाद के रहने वाले थे उनका देहान्त 9-12-96 को हुआ ।
स्वर्गीय श्री भगवान दास बरनवाल जी मिर्जापुर के रहने वाले थे उनका देहान्त 11-12-96 को हुआ ।
स्वर्गीय श्री राम राज शुक्ल जी प्रतापगढ़ के रहने वाले थे उनका देहान्त 20-12-96 को हुआ ।
स्वर्गीय श्री लक्ष्मी रमण आचार्य जी मथुरा के रहने वाले थे उनका देहान्त 4-1-97 को हुआ ।
स्वर्गीय श्रीमती जदुरानी जी हरदोई की रहने वाली थी उनका देहान्त 6-1-97 को हुआ ।
स्वर्गीय श्री अकबर हुसैन बाबर जी अम्बेदकर नगर के रहने वाले थे उनका देहान्त 16-1-97 को हुआ ।
स्वर्गीय श्री चन्द्रभान सिंह जी बांदा के रहने वाले थे उनका देहान्त 19-1-97 को हुआ ।
स्वर्गीय श्री दधीचि सिंह जी हरदोई के रहने वाले थे उनका देहान्त 28-1-97 को हुआ ।
स्वर्गीय श्रीमती पद्मा सेठ जी सीतापुर की रहने वाली थी उनका देहान्त 13/14-2-97 को हुआ ।
श्री बाबू लाल सरोज का निधन 27-2-97 को हुआ, श्री राजा बहादुर पशुपति नाथ शरण सिंह का निधन 6-3-97 को हुआ, डा० रामजी लाल सहायक का निधन 30-3-97 को हुआ और श्री वीरेन्द्र प्रताप शाही का निधन 31-3-97 को हुआ ।

मान्यवर, मेरी प्रार्थना है कि इन सभी दिवंगत आत्माओं को चिर शान्ति प्राप्त हो और साथ ही इन सभी के शोक-संतप्त परिवारों को इस असहय दुःख को सहन करने की क्षमता मिले और साथ ही आपसे प्रार्थना है कि हमारी यह शोक संवेदनायें इन सभी दिवंगत आत्माओं के परिवारों तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

नेता विरोधी दल (श्री धनीराम वर्मा)–

मान्यवर, आज हमारे बीच से हमारे प्रदेश के कई माननीय सदस्य जो इस सदन के बहुत प्रभावशाली सदस्यों में रहे हैं, आज नहीं रहे हैं । इन सदस्यों में सर्वश्री बनवारी राम, लखपत राम शर्मा, सूर्य प्रसाद अवस्थी, श्री श्रीश चन्द्र अग्रवाल, मोहम्मद असरार अहमद, राम पाल सिंह, अब्दुल रऊफ लारी, मदन पाण्डेय, मोती लाल अवस्थी, लक्ष्मी शंकर यादव, परिपूर्णा नन्द वर्मा, मोहम्मद सफीउर्रहमान अन्सारी, खुशहाल सिंह रांगण, श्रीमती गंगा देवी विशारद, सर्वश्री त्रेपन सिंह नेगी, रफीक अहमद खां, मारकण्डेय सिंह, नवरंग लाल, मुन्नू लाल द्विवेदी, ओम प्रकाश पासवान, राम स्वरूप, विजय पाल सिंह,

राघवेन्द्र सिंह, करन सिंह यादव, अमरेश चन्द्र पाण्डेय, नेक राम वर्मा, शिव बक्ष सिंह राठौर, जवाहर यादव, सतीश भाटिया, सईद मुर्तजा, शिवनाथ काटजू, बाबू लाल कुसुमेश, हनुमान प्रसाद मिश्र, काजी जलील अब्बासी, मरगूब अहमद खां, श्रीमती सुखरानी देवी, बाबा राम आधार यादव, जंग बहादुर सिंह पटेल, जगदीश शरण रस्तोगी, दाऊ दयाल खन्ना, भगवान दास बरनवाल, राम राज शुक्ल, लक्ष्मी रमण आचार्य, श्रीमती जदुरानी, अकबर हुसैन बाबर, चन्द्र भान सिंह, दधीचि सिंह, श्रीमती पद्मा सेठ, सर्वश्री बाबू लाल सरोज, राजा बहादुर पशुपति नाथ शरण सिंह, डा० राम जी लाल सहाय, और श्री वीरेन्द्र प्रताप शाही ऐसे बावन माननीय सदस्यगण जो इस माननीय सदन के सदस्य रहे और उनमें से कुछ लोग लोक सभा के सदस्य भी रहे हैं, आज हमारे बीच नहीं हैं। इन समस्त स्वर्गीय सदस्यों के प्रति माननीय नेता सदन ने जो भावनायें व्यक्त की हैं उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करना चाहता हूं और साथ ही यह भी कहना चाहता हूं कि इनमें से कई माननीय सदस्य जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में बढ़चढ़कर हिस्सा लिया था आज उन्हीं के सहयोग से हम सब आज यहां विधान सभा में बैठे हैं और प्रखर होकर अपनी बात कहने के हकदार हैं। मान्यवर, इतना ही नहीं इनमें से कुछ लोगों को व्यक्तिगत रूप से भी जानता हूं। स्वर्गीय डा० परिपूर्णानन्द जी जो इस सदन के सदस्य थे उनकी सेवाओं को सदन में हमेशा-हमेशा के लिए याद किया जायेगा। इसके साथ ही साहित्य के क्षेत्र में जो उन्होंने योगदान दिया है उसे भी कभी भुलाया नहीं जा सकता। इसी तरह से स्वर्गीय श्री लक्ष्मी रमण आचार्य जी, स्वर्गीय लक्ष्मी शंकर यादव जी, आदि ऐसे बहुत से माननीय सदस्य जो इस सदन के सदस्य थे आज हमारे बीच में नहीं हैं प्रदेश और देश की जनता के लिए तथा मानवता के लिए उनकी जो सेवायें रही हैं उनको कभी भुलाया नहीं जा सकता। यह सही है कि जो आयेगा वह जायेगा और हर व्यक्ति की अपनी अलग-अलग क्षमता होती है परन्तु कुछ विशिष्ट क्षमता वाले व्यक्ति जब हमारे बीच से चले जाते हैं तो एक लम्बे अरसे तक उनके स्थान की भरपाई होना असम्भव हो जाता है। मैं यहां पर यह कह देना उचित समझता हूं कि देश और प्रदेश की जनता उनके कार्यों को याद करेगी, उनके कृत्यों का अनुसरण करेगी, और उनके बनाये हुए पदचिन्हों पर चलकर इस प्रदेश और प्रदेश को आगे बढ़ाने में सहयोग देगी। श्रीमन्, हम यहां पर यह भी कह देना चाहेंगे कि यह विभिन्न विधाओं के व्यक्ति अपनी अलग-अलग छाप छोड़कर चले गये। उनका व्यक्तित्व और उनका कृतित्व बहुआयामी था इसलिए हम उनको याद करते हुए निश्चित तौर से इस प्रदेश की जनता को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा, कि मेरी और मेरे दल की शोक-संवेदनाओं के यह भाव इन समस्त स्वर्गीय बावन व्यक्तियों के परिवारजनों तक पहुंचाने की कृपा करेंगे। अन्त में हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि इन सभी दिवंगत आत्माओं को शास्वत शान्ति मिले और वह अदृश्य शक्ति इन सभी शोक-संतप्त परिवारजनों को धैर्य धारण करने की क्षमता प्रदान करें।

श्री कल्याण सिंह–

माननीय अध्यक्ष जी, जिन सभी 52 दिवंगत आत्माओं के निधन के संदर्भ में शोकोद्गार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल ने व्यक्त किये हैं मैं उससे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मैं अपनी ओर से एवं अपने दल की ओर से उन सभी दिवंगत आत्माओं के प्रति बड़े सम्मान के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। इन सभी महानुभावों ने राजनीतिक क्षेत्र में सामाजिक क्षेत्र में और साहित्यिक क्षेत्र में प्रदेश की और प्रदेश की जनता की महान सेवा की है और इसके लिए हम उनके ऋणी रहेंगे। उन्होंने जनता का विश्वास अर्जित किया उसका यश अर्जित किया। इस अवसर पर मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि इन सभी दिवंगत आत्माओं को शांति और सदगति प्रदान करें और उनके शोक-संतप्त परिवार को इस महान दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करें। मैं आपसे अनुरोध करूंगा, कि मेरे और मेरे दल की शोक-संवेदनाएं उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री प्रमोद कुमार–

माननीय अध्यक्ष महोदय, जिन 52 विधान सभा के भूतपूर्व सदस्यों, जो हमारे बीच में नहीं रहे के प्रति शोकोद्गार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल और माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी ने व्यक्त किये हैं मैं उससे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, इन 52 सदस्यों में से पांच सदस्य ऐसे हैं जिनकी नृशंस हत्याएं हुई हैं। आज राजनीति लोकतंत्र में जिस दौर से गुजर रही है जहां वर्तमान सदस्य श्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी को श्रद्धांजलि दी गयी और इन पांच भूतपूर्व सदस्यों को जिनकी हत्यायें पिछले दो वर्षों में हुई हैं को श्रद्धांजलि दी जा रही है, यह दुखद विषय बन गया है। यह सभी सदस्य अपने क्षेत्र में जनता का विश्वास और प्यार पाकर आये थे। मैं विशेष रूप से इनका उल्लेख करना चाहूंगा। श्री मदन पाण्डेय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी रहे। वे एक कुशल राजनीतज्ञ थे। श्री श्रीशचन्द्र अग्रवाल, जिनके पुत्र श्री नरेश अग्रवाल आज भी विधायक हैं, एक बहुत ही प्रभावशाली राजनीतिज्ञ थे। श्री लक्ष्मीशंकर यादव जो इस प्रदेश के महत्वपूर्ण पदों पर रह चुके थे एक अच्छे समाज सेवी थे और स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में उन्होंने हिस्सा लिया था। वे संसद सदस्य भी रहे, उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे। उनकी भी नृशंस हत्या की गयी। इसी प्रकार मैं बाबा राम आधार यादव का भी उल्लेख करना चाहूंगा ये महान समाज सेवी थे। ये स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी रहे। ये लोहिया जी के समर्थक थे। इसी तरह से श्री राम राज शुक्ला जो प्रतापगढ़ के थे उनकी भी हत्या की गयी। वे कांग्रेस कमेटी के मंत्री एवं अध्यक्ष भी रहे। वे जिला परिषद्, प्रतापगढ़ तथा जिला सहकारी विकास संघ के भी अध्यक्ष रहे। वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे श्री लक्ष्मी रमण आचार्य स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े हुए थे और वे डा० सम्पूर्णानन्द एवं श्री सी०बी० गुप्ता तथा श्री टी० एन० सिंह की सरकार के मंत्री रह चुके थे। वे एक कुशल प्रशासक थे उनकी सेवाओं को भुलाया नहीं जा सकता है। मैं अपनी ओर से एवं अपने दल की ओर से इन सभी दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि इनके शोक-संतप्त परिवार तक हमारी श्रद्धांजलि पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री कोकब हमीद–

"कुछ कहीं, कुछ कहां कुछ लालाओं गुल में नुमाया हो गयी।
खाक में क्या-क्या सूरते होंगी जो पिनाह हो गयीं।"

मान्यवर, जिन 52 स्व० विधायकों का जिक्र यहां पर चल रहा है वे भी कभी यहां पर बैठते थे जहां पर हम बैठ रहे हैं हम उनको खिराज-ए-अकीदत पेश करते हैं । मैं अपने दल की तरफ से एवं अपनी तरफ से यह गुजारिश करूंगा, कि उनके परिवार को हमारी तरफ से शोक-संवेदनाएं भिजवा दें । एक बात और मैं कहना चाहूंगा, कि इन 52 स्व० सदस्यों में से 5 सदस्य ऐसे हैं जिनकी नृशंस हत्याएं हुई हैं । हम सोचने में मजबूर हैं कि राज नेताओं की हत्यायें बढ़ क्यों रही हैं ?

इन शब्दों के साथ मैं आपसे गुजारिश करता हूं कि मेरी और मेरे दल की भावनायें शोक-संतप्त परिवार वालों तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री राम आसरे पासवान–

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य माननीय नेताओं ने जो 52 दिवंगत माननीय सदस्यों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित किये हैं, मैं उनको अपने और अपने दल से सम्बद्ध करता हूं । मान्यवर, मैं मांग करता हूं कि जिन 5 माननीय सदस्यों की हत्यायें हुई हैं, उससे ऐसा लगता है किसी राज नेता का जीवन सुरक्षित नहीं है । यह बड़े दुख की बात है और इस प्रकार की घटनाओं पर रोक लगनी चाहिये और इस पर सोचने के लिये कोई न कोई कमेटी बनायी जानी चाहिये । जिले के अधिकारियों को कड़े निर्देश दिये जायें कि अपराधियों पर नजर रखी जाये और जो अपराधी पनप रहे हैं उन पर रोक लगायी जा सके ।

इन शब्दों के साथ मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरी और मेरे दल की भावनाओं को सभी दिवंगत सदस्यों के परिवार वालों तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री राम जग–

अध्यक्ष जी, हमारे जिन 52 माननीय सदस्यों का निधन हो गया है और जिनके प्रति माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य माननीय नेताओं ने जो विचार व्यक्त किये हैं, मैं उनसे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं । हमारे बीच 52 सदस्य जो नहीं रहे हैं, उनमें से कई की हत्यायें हुई हैं । मान्यवर, इन नेताओं ने जो सेवायें की हैं, उनको प्रदेश कभी भूल नहीं सकता है । इनमें एक कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के सदस्य एवं नेता जो फैजाबाद के रहने वाले थे और जो जमींदार परिवार के थे, श्री अकबर हुसैन बाबर जिन्होंने सदैव लाल झन्डे को उठाया है । उन्होंने अंतिम क्षण तक कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) में रहकर जनता की सेवा की है ।

इसी प्रकार से दिवंगत सदस्यों में कई समाजवादी विचारधारा के थे जिन्होंने सदैव साम्प्रदायिकता के विरोध में संघर्ष किया है । ऐसे सभी विधायकों के न रहने से प्रदेश को जो क्षति हुई है, वह पूरी नहीं की जा सकती है । मैं इन 52 दिवंगत नेताओं के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं और मैं अपनी ओर से और कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) की ओर से उनको श्रद्धांजति अर्पित करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि मेरे यह विचार उनके परिवार वालों तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री रघुवर दयाल वर्मा–

मान्यवर, माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी, माननीय नेता कांग्रेस तथा अन्य माननीय नेताओं ने इस सदन के भूतपूर्व जिन 52 सदस्यों के प्रति जो

शोकोद्गार व्यक्त किये हैं उनसे मैं अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। श्रीमन्, आज यह बहुत ही दुख का समय है कि हमारे प्रदेश से ऐसी महान 52 विभूतियां जिनका जीवन देश और प्रदेश की सेवा में अर्पित रहा हमारे बीच में नहीं हैं। उनकी सेवायें विधान सभा के अन्दर और बाहर हमेशा याद रहेंगी। श्रीमन् जिनके परिवारजनों तक हम संवेदना भेज रहे हैं उनमें से अब्दुल रऊफ लारी साहब और मैं एक ही दल में पदाधिकारी के रूप में काम कर चुके हैं। माननीय नेकराम शर्मा अलीगढ़ हमारे पड़ोसी रहे। माननीय लक्ष्मी रमण आचार्य के साथ निकट का संबंध रहा तथा बाबाराम आधार जी इलाहाबाद वाले एवं त्रेपन सिंह नेगी जी तथा अनेक नेताओं के साथ हमें काम करने का मौका मिला आज वह हमारे बीच में नहीं हैं। लेकिन इनमें से 5 लोग ऐसे हैं जिनकी नृशंस हत्या हुई है। राजनीति में हत्याओं का दौर हम सबके लिए चिन्ता का कारण है। माननीय नेता सदन और सभी दलों के नेताओं को इस पर गम्भीरता से विचार करना पड़ेगा और राजनीति के अपराधीकरण के कारण जो आज मुल्क की हालत बिगड़ी है इस पर विचार करना होगा और भविष्य में इस तरह से हत्या न हो और ऐसे समाजसेवी लोगों को सेवा करने का पूरा मौका मिले। इन शब्दों के साथ इन सभी शोक-संतप्त परिवारों तक हमारे और हमारे दल की तरफ से संवेदना भेजने का कष्ट करें।

* श्री धनराज यादव–

माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी माननीय नेता सदन, माननीय नेता विपक्ष, नेता भारतीय जनता पार्टी तथा अन्य नेताओं ने जो श्रद्धांजलि अर्पित की है उन सभी 52 माननीय सदस्यों की अपने-अपने क्षेत्र में विशेषतायें रहीं हैं और इस सदन की शोभा उन्होंने बढ़ाई है जो आज हमारे बीच में नहीं हैं। मेरी ओर से उन सभी शोक संतप्त परिवारों तक संवेदना पहुंचाने का कष्ट करें, इनके साथ ही स्व० सतीश भाटिया जिनके साथ हमारा विगत 20 वर्षों से साथ रहा विद्यार्थी जीवन से ही साथ रहा नौगढ़ सिद्धार्थनगर में वह व्यवसाय के साथ-साथ सामाजिक कार्यकर्ता भी रहे, वह एक कर्मठ कार्यकर्ता और अत्यन्त परिश्रमी थे समाज और देश हित में हमेशा लगे रहते थे इसी कारण नौगढ़ बस्ती से आकर लखनऊ से दो दो बार भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर विधायक रहे। वह अपने क्षेत्र में अत्यन्त लोकप्रिय रहे। मैं आज इन सब के साथ उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके परिवारजनों को अपनी संवेदना प्रस्तुत करता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्माओं को ईश्वर शांति प्रदान करें।

*श्री अवधेश प्रसाद–

श्रीमन्, आज इस आदरणीय सदन के लिये बड़ा दुख का दिन है जब हम आज 52 ऐसे माननीय सदस्यों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। मैं समझता हूं कि ऐसा दिन इस आदरणीय सदन में कभी नहीं आया होगा। इन सभी माननीय सदस्यों के प्रति माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष, माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी, माननीय नेता कांग्रेस तथा अन्य माननीय नेताओं ने जो भावनायें व्यक्त की हैं उससे मैं अपने को संबद्ध करता हूं।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया।

मान्यवर, माननीय नेता सदन ने जिन 52 सदस्यों के निधन की सूचना दी है उनमें से 5 ऐसे सदस्य हैं जिनका सामान्य रूप सें निधन नहीं हुआ बल्कि उनकी हत्या हुई है । मान्यवर ऐसी हत्याओं से न केवल जनता पर असर पड़ता है बल्कि ऐसी हत्याओं से समूचे उत्तर प्रदेश की जनता में भय और आतंक का वातावरण व्याप्त हुआ ।

श्रीमन् ओम प्रकाश पासवान जी की हत्या जब लोक सभा चुनाव डिक्लेयर हो गया था, समाजवादी पार्टी की तरफ से एम० पी० के टिकट का अंतिम रूप से फैसला हो चुका था उस समय वह अपने क्षेत्र में एक सभा कर रहे थे कम से कम 10 हजार की भीड़ में उनकी हत्या हुई । उनकी हत्या के साथ साथ 12 से ज्यादा लोगों को भी मौत के घाट उतार दिया गया और लगभग एक हजार लोगों को गंभीर चोटें आयी । इसके अलावा डेढ़ सौ लोगों को और गंभीर चोटें आयीं जिसमें से तमाम लोग आज भी अस्पताल में इलाज करा रहे हैं । मान्यवर, इसी तरह से माननीय शाही जी की हत्या हुई और उनकी हत्या अभी हाल ही में हुई है । माननीय शाही जी लखनऊ आये थे और उनकी दिन दहाड़े हत्या कर दी गई । संभवतः वह पार्टी के नेता से मिलने आये थे और दिन दहाड़े हत्या कर दी गई । उनकी हत्या से प्रदेश में भय और आतंक का वातावरण व्याप्त हुआ । श्रीमन् इसी तरह से लक्ष्मीशंकर यादव जी की हत्या हुई । उनकी किसी से दुश्मनी नहीं रही है । वह शांति स्वभाव के व्यक्ति थे उनकी विद्वता और उनके काम करने का तरीका अलग रहा है । वह सदन के आदरणीय सदस्य और शासन में रहे हैं और अपने काम से उन्होंने जो छाप छोड़ी है उसकी मिसाल नहीं मिलती है । उनकी हत्या लखनऊ में हुई जो अत्यन्त दुखद है । इसी तरह से आदरणीय द्विवेदी जी के बारे में आदरणीय नेता सदन और अन्य माननीय सदस्यों ने अपनी भावनायें व्यक्त की हैं ।

श्रीमन् जवाहर सिंह यादव की भी हत्या हुई । यह राजनीतिक हत्यायें जो हुई हैं यह अत्यन्त दुखद है । श्रीमन् इसके अलावा कुछ और माननीय सदस्य हैं जो न केवल इस आदरणीय सदन के सदस्य रहे हैं बल्कि देश की आजादी में भी उनका बड़ा योगदान रहा है और उनका देश के गौरव को बढ़ाने में बड़ा योगदान रहा है । मान्यवर, इसी तरह से स्वर्गीय आचार्य जी का व्यक्तित्व था । उनसे मुझे बात करने का अवसर मिला था, एक बार मैं ट्रेन से आ रहा था, ट्रेन में उनसे 5 मिनट बात करने का अवसर मिला । उनका मुझ पर बडा अच्छा असर पड़ा । मैंने अनुभव किया कि आचार्य जी एक अवतारी पुरुष थे और एक युग पुरुष थे मेरे जनपद फैजाबाद के स्व० अकबर हुसैन बाबर जी थे आज वह अंबेडकर नगर के नाम से जिला हो गया है ।

उन्होंने हमेशा हमेशा गरीबों की सेवा की है और अन्याय तथा अत्याचार से हमेशा डटकर मुकाबला किया है, वह भी आज हमारे बीच में नहीं रहे हैं । इसी तरह से स्व० अब्दुल रउफ लारी स्व० चौधरी चरण सिंह के सहयोगियों में से थे । जब भारतीय क्रांति दल चौधरी साहब ने बनाया तो वह उनके सहयोगी थे । आज वह हमारे बीच में नहीं हैं । आज हम जिन 52 सदस्यों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं जो इस आदरणीय सदन के सदस्य थे । उनके निधन से आज पूरा प्रदेश दुखी है । मेरा आपसे निवेदन है कि मेरी यह शोक-संवेदना उनके परिवार तक भेजने की कृपा करें ।

श्री श्याम लाल रावत–

मान्यवर, व्यवस्था का प्रश्न है ।

श्री अध्यक्ष–

माननीय सदस्य, निधन के निदेश के समय व्यवस्था के प्रश्न की स्थिति नहीं होती है । कृपया अपने नेता विरोधी दल से परामर्श कर लें ।

माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, भारतीय जनता पार्टी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, भारतीय किसान कामगार पार्टी, जनता दल, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) समता पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, राष्ट्रीय समाजवादी जनता पार्टी के माननीय नेतागण तथा माननीय सदस्यगण, 12 वीं विधान सभा के अंतिम सत्र के पश्चात् और इस 31 मार्च तक 52 ऐसे महानुभावों का निधन हो गया जो कभी उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य थे इनमें से कुछ तो ऐसे माननीय सदस्य थे जो इस सदन में अपने योगदान के माध्यम से ऐतिहासिक पुरुष बन गये थे । कुछ ऐसे माननीय सदस्य थे जो भले ही एक या दो बार इस सदन के सदस्य रहे हों लेकिन सदन के बाहर भी वह समाजसेवा, साहित्य सेवा में लगे रहे और स्वतंत्रता के आन्दोलन में उनका योगदान रहा । साहित्यिक क्षेत्र में भी उनका योगदान रहा । उनके इस योगदान ने उन्हें स्मरणीय बना दिया । मैं विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूंगा श्री अब्दुल रऊफ लारी जी का । जब मैं 1977 में चुनकर आया तो वह मेरे अभिन्न मित्रों में से थे । एक मंत्री के रूप में एक विधायक के रूप में उनका बहुत योगदान रहा है । श्री लक्ष्मीशंकर यादव जी के साथ सदस्य रहने का अवसर मुझे प्राप्त नहीं हुआ लेकिन उन्होंने जनपद जौनपुर में ही नहीं बल्कि अपने मंत्रित्वकाल में जिस प्रकार से कार्य किया उससे इतनी ख्याति प्राप्त की कि वह बहुत लोकप्रिय हो गये थे । राजस्व के क्षेत्र में अधिनियमों में संशोधन करने का जो अवसर मिला तो उसका पूरा लाभ उठाते हुये राजस्व को बड़ी अच्छी दिशा दी थी ।

श्री परिपूर्णानन्द वर्मा जी प्रातः स्मरणीय लोगों में हैं । यह एक बार सदस्य चुने गये लेकिन स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़े रहे तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के विभिन्न पदों को सुशोभित किया । उनका योगदान राजनीतिक क्षेत्र में याद किया जायेगा । इसी तरह श्री वेपन सिंह नेगी भी थे । इसी क्रम में श्री मारकण्डेय सिंह जी जिनकी मृत्यु दर्दनाक अवस्था में हुई । उनके कोल्ड स्टोरेज में आग लग गई और वे उसमें झुलसकर मर गये । वह बड़े लोकप्रिय व्यक्ति थे उनका हंसता हुआ चेहरा स्मरण हो आता है । श्री अमरेश चन्द्र पाण्डेय जी मिर्जापुर से सदस्य रहे । उन्होंने समाज की जो सेवा की है उसके लिये इन्हें याद किया जायेगा । श्री सतीश भाटिया ने बलिया से लखनऊ आकर अपनी छवि बनाई । दो बार यह विधान सभा के सदस्य रहे थे । श्री शिवनाथ काटजू में भारतीयता कूट-कूट कर भरी थी । उच्च न्यायालय इलाहाबाद में वह न्यायमूर्ति भी रहे । न्याय के क्षेत्र में उनका और उनके परिवार का योगदान रहा है । श्री बाबा राम आधार यादव डा० लोहिया के विचारों को मानने वालों में से थे । सन् 77 में वह हमारे साथ विधायक थे । श्री जगदीश शरण रस्तोगी, श्री दाऊ दयाल खन्ना ऐसे सदस्यों में थे जिनका नाम अपरिचित नहीं है और उन्होंने समाज में विभिन्न क्षेत्रों में सेवा की है । श्री भगवान दास बरनवाल जनसंघ पार्टी से सदस्य थे और लोकप्रिय रहे । श्री लक्ष्मी रमण आचार्य से लोग अधिवक्ता के नाते, राजनेता के नाते प्रभावित थे । मंत्री पद पर रहते हुये और मंत्री पद पर न रहते हुये भी बड़ा सक्रिय और सार्थक योगदान उन्होंने दिया । श्रीमती पद्मा सेठ जी सदैव सदन में याद की जायेंगी श्री राम जी लाल सहायक जी को कोई भूला नहीं है । इन सभी 52 भूतपूर्व विधायकों के प्रति जो विचार व्यक्त किये गये हैं मैं अपने को उससे सम्बद्ध करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार को यह

कष्ट सहन करने की शक्ति प्रदान करें । मैं एक विशेष उल्लेख करना चाहूंगा कि श्रीश चन्द्र अग्रवाल जो कि वर्तमान सदस्य नरेश चन्द्र अग्रवाल जी के पिता थे । मेरा विश्वास है कि उनका जो योगदान राजनीति में रहा है श्री नरेश चन्द्र अग्रवाल जी को उससे गम्भीर मार्गदर्शन मिलेगा । ईश्वर से इन दिवंगत आत्माओं के लिये प्रार्थना है कि वह उन्हें शांति प्रदान करे और उनके परिवार को आप सबकी तरफ से शोक- संवेदनायें पहुंचा दी जायेंगी । हम सब खड़े होकर दो मिनट का मौन रखेंगे ।

(दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिये सदन में सभी सदस्य दो मिनट मौन खड़े हुये ।)

श्री अध्यक्ष–

ऊं शान्ति ।

श्री नीलम संजीव रेड्डी, श्री हितेश्वर सैकिया, श्री बेअंत सिंह, श्री एन० टी० रामाराव, श्रीमती जानकी रामचन्द्रन, डा० एम० चेन्ना रेड्डी, डा० बी० गोपाल रेड्डी, श्री दिनेश सिंह, श्री राम कृष्ण खत्री, श्री शिव वर्मा, श्री उपेन्द्र नाथ अश्क, श्री यित्जाक राबिन, श्री डेंग श्याओपिंग, श्री लक्ष्मी शंकर व्यास, श्री बाबा साहब देवरस, श्रीमती अरुणा आसफ अली तथा श्री बीजू पटनायक विशिष्ट महानुभावों के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मंत्री (सुश्री मायावती)–

माननीय अध्यक्ष जी इस बीच हमारे देश तथा विश्व की ऐसी महान विभूतियां हमारे बीच से चली गई हैं जिनके जाने से सामाजिक और राजनीतिक क्षति हुई है । ऐसे महान लोगों ने जहां एक ओर देश की आजादी के स्वतंत्रता संग्राम में बढ़चढ़कर भाग लिया वही दूसरी ओर ऊंचे-ऊंचे पदों पर रहकर समाज की सेवा की है । विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिये अपार योगदान दिया है जैसे भारत के पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय नीलम संजीव रेड्डी जी का निधन 1 जून, 1996 को हो गया था । उनका जन्म 19 मई, 1913 को आन्ध्र प्रदेश के अनन्तपुर जिले के इल्लुरू गांव में हुआ था । स्वर्गीय रेड्डी छात्र जीवन से ही स्वतंत्रता संग्राम में कूद गये और कई बार जेल गये । 1946 में मद्रास विधान सभा के सदस्य रहे, राज्यसभा और लोक सभा के सदस्य रहे, आन्ध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री रहे । भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष रहे । लोक सभा के अध्यक्ष रहे । केन्द्र सरकार में मंत्री भी रहे । 1977 में भारत के राष्ट्रपति बने । श्री रेड्डी एक अनुभवी राजनीतिक नेता, महान देशभक्त, महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे । उनके निधन से देश ने एक सच्चा राष्ट्र भक्त खो दिया है । कृपया उनके शोक-संतप्त परिवार तक मेरी तथा मेरे दल की शोक-संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें ।

इसी प्रकार असम के पूर्व मुख्य मंत्री श्री हितेश्वर सैकिया जी का निधन 22 अप्रैल, 1996 को हुआ था । इनका जन्म 3 अक्टूबर 1934 को हुआ था इन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की । कई बार असम विधान सभा के सदस्य रहे । असम प्रदेश में मंत्री रहे तथा बाद में मुख्य मंत्री रहे । मिजोरम के राज्यपाल रहे । इन्होंने सीमावर्ती राज्य में शान्ति के लिये काफी कदम उठाये । सैकिया जी के निधन से हम सब दुखी हैं । कृपया उनके शोक-संतप्त परिवार तक हमारी तथा हमारे दल की शोक-संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें ।

मान्यवर, पंजाब के मुख्य मंत्री बेअंत सिंह जी का निधन 31 अगस्त, 1995 को हुआ था। उनक जन्म 19 फरवरी, 1922 को लुधियाना में हुआ था। वह कई बार पंजाब विधान सभा के सदस्य रहे पंजाब के मुख्य मंत्री भी रहे। उन्होंने आतंकवाद को समाप्त करने के लिये महत्वपूर्ण कार्य किये औ उसी का शिकार भी हो गये। देश की एकता और अखण्डता के लिये शहीद हुये नेता के निधन से ह सभी दुखी हैं। कृपया हमारी शोक-संवेदना उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री एन० टी० रामाराव पूर्व मुख्य मंत्री आन्ध्र प्रदेश का निधन 18 जनवरी, 1996 को हुआ उनक जन्म 28 मई, 1923 को हुआ। आप 1983 में आन्ध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री बने। वह चार बार इस महत्वपूर्ण पद पर रहे। वह फिल्मी दुनिया से सम्बन्ध रखते थे वह एक लोक प्रिय नेता रहे। जिनके निधन से हम सब दुखी हैं कृपया उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी संवेदना पहुंचाने की कृपा करें।

तमिलनाडु के पूर्व मुख्य मंत्री श्रीमती जानकी रामचन्द्रन का निधन 19 मई, 1996 को हो गया इनका जन्म केरल के एक परिवार में हुआ। आप 1987 में मुख्य मंत्री बनी। इनका लगाव फिल्म दुनिया से रहा। इनके निधन से हम सब दुखी हैं। कृपया हमारी शोक-संवेदना इनके परिवार तक पहुचाने की कृपा करें।

उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल डा० एम० चेन्ना रेड्डी का निधन 2 दिसम्बर, 1996 को हुआ इनका जन्म 13 जनवरी, 1919 को हुआ। इनकी शिक्षा एम० बी० बी० एस० तक थी। 1947 से 1950 तक यह संसद सदस्य भी रहे। आप राज्य के मंत्री तथा दो बार मुख्य मंत्री भी रहे। वह पंजाब हरियाणा, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश के राज्यपाल भी रहे। आप राज्य सभा के सदस्य भी रहे तथा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी रहे। इनके निधन से हम सब दुखी हैं। कृपया हमारी तरफ से इनके शोक संतप्त परिवार तक श्रद्धांजलि पहुंचाने की कृपा करें।

उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल श्री बी० गोपाल रेड्डी का निधन 9 मार्च, 1997 को हुआ। इनक जन्म 5 अगस्त, 1907 को आन्ध्र प्रदेश में हुआ। यह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी व कई बार राज्य विधान सभा के सदस्य भी रहे। आप मंत्री व लोक सभा तथा राज्यसभा के सदस्य रहे। आप उत्तर प्रदेश के राज्यपाल भी रहे। इनके निधन से हम सब दुखी हैं कृपया इनके शोक-संतप्त परिवार तक हमारी ओर से शोक-संवेदना पहुंचाने की कृपा करें।

भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री स्वर्गीय दिनेश सिंह जी का निधन 30 नवम्बर, 1995 को हुआ। इनका जन्म 19 जुलाई, 1925 को प्रतापगढ़ में हुआ। यह कई बार लोक सभा व राज्य सभा के सदस्य रहे। आप नेहरू जी के निजी सचिव भी रहे। केन्द्र के कई विभागों में मंत्री भी रहे। कई पुस्तकों को लिखा उनके निधन से हम सब दुखी हैं। कृपया हमारी तरफ से उनके परिवार तक शोक-संवेदना पहुंचाने की कृपा करें।

काकोरी काण्ड के अमर शहीद राम कृष्ण खत्री जी का निधन 95 वर्ष की अवस्था में 17 अक्टूबर 1996 को हुआ। आपका जन्म 3 मार्च, 1902 में महाराष्ट्र में हुआ। ब्रिटिश राज के खिलाफ शाही खजाना लूटने के कारण इन्हें 10 वर्ष की सजा सुनाई गई थी ऐसे महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के निधन से हमने एक सच्चा देश भक्त खो दिया है। हम सब उनके निधन से दुखी हैं। कृपया हमारी ओर से उनके शोक-संतप्त परिवार तक शोक-संवेदना पहुंचाने की कृपा करें।

महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी शिवराम वर्मा, शहीदे आजम भगत सिंह के साथी लाहौर काण्ड के क्रांन्तिकारी का निधन 10 जनवरी, 1997 को हुआ। आपका जन्म 9 फरवरी, 1904 को हुआ। आप महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। इन्होंने अनेकों पुस्तकें लिखी हैं। उनके निधन से हम सब दुखी हैं। कृपया उनके शोक-संतप्त परिवार तक हमारी शोक-संवेदना पहुंचाने की कृपा करें।

हिन्दी और उर्दू के महान साहित्यकार श्री उपेन्द्र नाथ अश्क का निधन 19 जनवरी, 1996 को हुआ। आपका जन्म 1910 में हुआ। कई पुस्तकों की रचना करने वाले हिन्दी और उर्दू के इस महान साहित्यकार के निधन से हम सब दुखी हैं। कृपया उनके शोक-संतप्त परिवार तक हमारी संवेदना पहुंचाने की कृपा करें।

मान्यवर, इजराइल के प्रधान मंत्री श्री यित्जाक राबिन का निधन 4 नवम्बर, 1995 को हुआ। श्री राबिन का जन्म 1 नवम्बर, 1922 को हुआ। उनका अधिकतर जीवन सेना में बीता। वह अमेरिका में राजदूत रहे। इजराइल में शान्ति लाने के लिये उन्होंने महान कार्य किया। 1992 में वह प्रधान मंत्री बने। उनके निधन से विश्व ने एक शान्ति दूत खो दिया है। कृपया उनके परिवार तक मेरी संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

मान्यवर, चीनी नेता श्री डेंग श्याओपिंग का निधन 19 फरवरी, 1997 को हो गया। श्री डेंग का जन्म 22 अगस्त, 1904 में हुआ। 1952 में वे उप प्रधान मंत्री बने, 1977 में वे पुनः प्रधान मंत्री बने। विश्व ने श्री डेंग के रूप में एक महान नेता खो दिया है। कृपया मेरी शोक-संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

मान्यवर, हिन्दी के सुप्रसिद्ध पत्रकार डा० लक्ष्मी शंकर व्यास का निधन 4 दिसम्बर, 1995 को हो गया। उनका जन्म 3 जुलाई, 1920 को हुआ था। वे एक स्वतंत्रता सेनानी तथा हिन्दी दैनिक "आज" के सम्पादक रहे। हिन्दी सेवा के लिये उन्हें कई बार पुरस्कृत भी किया गया। उनके निधन से हम सब दुखी हैं। कृपया उनके शोक-संतप्त परिवार तक मेरी संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

मान्यवर, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पूर्व सरसंघ चालक बाला साहब देवरस का निधन 17 जून, 1996 को हो गया। उनका जन्म 5 नवम्बर, 1915 को नागपुर में हुआ था। 1935 में स्नातक होने के बाद उन्होंने कानून की शिक्षा पूरी की थी। 1926 में पहली बार वे "बाल स्वयंसेवक" हुये थे। 1973 में श्री गोलवलकर जी के निधन के उपरान्त सर संघ संचालक बने। बाला साहब देवरस जी के न होने से हम सब दुखी हैं। कृपया मेरी शोक-संवेदना शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

मान्यवर, सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी अरुणा आसिफ अली जी का निधन 29 जुलाई, 1996 को हो गया। वह 16 जुलाई, 1909 में जन्मी थीं। उन्होंने 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में बढ़ चढ़कर भाग लिया और कई बार जेल भी गईं। उन्हें वर्षों तक भूमिगत रहना पड़ा उनकी सेवाओं के लिये उन्हें 1971 में अन्तराष्ट्रीय सद्भावना के लिये जवाहर लाल नेहरू पुरस्कार तथा 1975 में शांति के लिये शांति पुरस्कार मिला। इस महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के निधन से देश को महान क्षति पहुंची है। कृपया उनके शोक-संतप्त परिवार तक मेरी शोक-संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

मान्यवर, उड़ीसा के पूर्व मुख्य मंत्री श्री बीजू पटनायक का निधन 17 अप्रैल, 1997 को हो गया। उनका जन्म 5 मार्च, 1916 को कटक में हुआ था। उन्हें अपने देश ही नहीं बल्कि इंडोनेशिया की

आजादी की लड़ाई में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का गौरव हासिल था । वे 25 वर्षों तक उड़ीसा विधान सभा के सदस्य रहे । 1962 और 1990 में उड़ीसा के मुख्य मंत्री रहे, राज्य सभा और लोक सभा के सदस्य भी रहे । केन्द्र में मंत्री रहे । उन्हें इंडोनेशिया सरकार ने दो बार अपने यहां के सर्वोच्च सम्मान "भूमि पुत्र" से सम्मानित किया था । उनके निधन से देश को महान हानि पहुंची है । कृपया उनके शोक-संतप्त परिवार तक मेरी शोक-संवेदना पहुंचाने की कृपा करें ।

नेता विरोधी दल (श्री धनी राम वर्मा)–

श्रीमन् हमारे बीच से 17 विशिष्ट हस्तियां उठ गयीं जिनके संबंध में नेता सदन ने जो अपने उद्गार प्रकट किये हैं मैं उनसे अपने को संबद्ध करते हुये कहना चाहूंगा कि इनमें से स्वर्गीय बेअंत सिंह, भूतपूर्व मुख्य मंत्री, पंजाब, स्व० श्री यित्जाक राबिन भूतपूर्व प्रधान मंत्री इजराइल, स्वर्गीय श्री दिनेश सिंह, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री, डा० लक्ष्मी शंकर व्यास, सुप्रसिद्ध हिन्दी पत्रकार एवं सम्पादक, श्री एन० टी० रामाराव भूतपूर्व मुख्य मंत्री, आन्ध्र प्रदेश, श्री उपेन्द्र नाथ अश्क, सुप्रसिद्ध साहित्यकार, श्री हितेश्वर सैकिया, भूतपूर्व मुख्य मंत्री असम, श्रीमती जानकी रामचन्द्रन, भूतपूर्व मुख्य मंत्री तमिलनाडु, स्व० श्री नीलम संजीव रेड्डी, भारत के पूर्व राष्ट्रपति, श्री बाला साहब देवरस, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पूर्व सरसंघ चालक, श्रीमती अरुणा आसफ अली, सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, श्री राम कृष्ण खत्री, वयोवृद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, स्व० डा० एम० चेन्ना रेड्डी, भूतपूर्व राज्यपाल उत्तर प्रदेश, श्री शिव वर्मा वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी, श्री डेंग श्याओपिंग चीनी नेता, स्व० डा० बी० गोपाल रेड्डी, भूतपूर्व राज्यपाल, उत्तर प्रदेश और श्री बीजू पटनायक, भूतपूर्व मुख्य मंत्री, उड़ीसा यह विशिष्ट व्यक्ति चाहे देश के हों या विदेश के हों इनकी सेवायें देश और समाज के लिये हमेशा हमेशा याद की जायेंगी । मान्यवर इनमें से कुछ ऐसी हस्तियां भी हैं जिन्होंने एक विशिष्ट छाप छोड़ी है । स्व० एन० टी० रामाराव जी एक ऐसे व्यक्ति थे जिनका फिल्मी जगत पर कोई सानी नहीं था इनके साथ ही साथ उन्होंने अपने अकेले दम पर आन्ध्र प्रदेश में तेलगूदेशम पार्टी का गठन करके उसे उच्च शिखर पर पहुंचाया था और उन्हें विधान सभा तथा लोक सभा के चुनाव में भारी बहुमत मिला और वह प्रदेश के मुख्य मंत्री बने । ऐसे कम व्यक्ति होते हैं जो स्वयं कुआं खोदकर पानी पिये लेकिन श्री एन० टी० रामाराव ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने स्वयं कुआं खोदा और पानी पिया ।

मान्यवर, इसी तरह से साहित्य जगत में हमारे अश्क जी हिन्दी और उर्दू दोनों पर समान अधिकार रखते थे । उनकी रचनायें हिन्दी और उर्दू जगत में जब तक यह संसार रहेगा तब तक इस देश और प्रदेश के लोगों को प्रेरणा मिलती रहेगी । इसी तरह से श्री दिनेश सिंह जी भी बहुत समय तक लोक सभा के सदस्य रहे, विदेश मंत्री रहे और इसके अलावा वह विभिन्न पदों पर रहकर देश की जो सेवायें की है वे सेवायें सदैव याद रखी जायेंगी । श्री बाला साहब देवरस हमारे बीच में नहीं हैं लेकिन उन्होंने जो भारतीय संस्कृति और सभ्यता के लिये अपने जीवन में उसे मजबूत बनाने के लिये जो प्रयास किये वह भुलाये नहीं जा सकते हैं । स्वर्गीय श्री राबिन जी जो इजराइल के प्रधान मंत्री रह चुके थे, के बारे में कहना चाहूंगा उन्होंने एक छोटे से देश इजरायल को उस हद तक ऊंचाई तक पहुंचा दिया जिसकी शायद दुनियां के लोग कभी कल्पना भी नहीं कर सकते थे । चीनी नेता डेंग श्याओपिंग के बारे में हम सब जानते हैं कि उन्होंने चाइना को बढ़ाने के लिये जो कार्य किया है, चीन को मजबूत करने के लिये जो कार्य किया, वह शायद चाइनीज अनेक पीढ़ियों तक याद करते रहेंगे । उनका सानी संभवतः बहुत समय

तक चाइना में पैदा नहीं होगा । ऐसे व्यक्ति दुनियां में बहुत कम ही मिलते हैं । मैं उड़ीसा के भूतपूर्व मुख्य मंत्री स्वर्गीय बीजू पटनायक जी, जो अभी हाल ही में हमसे जुदा हुये हैं, उनके बारे में जो कुछ भी कहा जाय थोड़ा है । उन्होंने इन्डोनेशिया की आजादी के लिये 1948 में और हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के बंटवारा में कश्मीर के लोगों को निकालने में जो योगदान दिया वह उनके साहस का अद्भुत उदाहरण है, उसे भी लोग याद करते रहेंगे । बीजू पटनायक जी उड़ीसा के निर्माता रहे हैं, उड़ीसा की जनता हमेशा-हमेशा उनका नाम आदर की दृष्टि से लेती रहेगी । इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा ।

डा० नीलम संजीव रेड्डी के बारे में भी हम यह कहेंगे कि वह एक स्वतंत्र विचार के, बहुत ही साहसी व्यक्ति थे । उन्होंने कभी भी सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया । ऐसी देश और विदेश की 17 हस्तियां जो हमारे बीच आज नहीं हैं, निश्चय ही देश और समाज, विदेश के व्यक्ति उनके नाम को आदर की दृष्टि से लेते रहेंगे । मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनके शोक-संतप्त परिवारों के लिये शोक-संवेदना प्रकट कर रहा हूं और मान्यवर, आपसे निवेदन करता हूं कि देश के स्वर्गीय व्यक्तियों के परिवारजनों तक तो हमारे भावोद्गार आप पहुंचाने की कृपा करेंगे ही, साथ ही साथ श्री यित्जाक राबिन जी और डेंग श्याओपिंग चाइना के जो थे उनके परिवारजनों तक भी हमारी भावनायें पहुंचाने की कृपा करें । साथ ही साथ उनके राष्ट्र को भी हमारी भावनाओं से अवगत कराने की कृपा करें । इन्ही शब्दों के साथ मैं उन सभी महान हस्तियों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

श्री कल्याण सिंह–

माननीय अध्यक्ष जी, भारत के पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय माननीय संजीव रेड्डी जी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंचालक बाला साहब देवरस जी सहित जितने 17 राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के महान व्यक्तियों के बारे में, महान विभूतियों के बारे में उनके निधन के संदर्भ में माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल ने जो भावनायें व शोकोद्गार व्यक्त की हैं मैं अपने को और अपने दल को उनके साथ सम्बद्ध करता हूं । मैं इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघचालक श्रद्धेय बाला साहब देवरस के सम्बन्ध में कुछ विशेष उल्लेख करना अपना कर्तव्य समझता हूं । वह एक प्रकार से राष्ट्रवादी थे, समाज के लिये जिये, समाज के लिये ही मरे । समाज हित और देश हित उनके लिये सबसे प्रथम स्थान पर था । समाज की एकता और अखण्डता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये उन्होंने जीवन भर काम किया । उनके जीवन का हर कण उनके जीवन का हर क्षण समाज के लिये समर्पित था । उनकी स्पष्ट मान्यता थी कि समाज सहजोर रहेगा तो राष्ट्र सहजोर रहेगा, समाज कमजोर पड़ गया तो राष्ट्र कमजोर पड़ जायेगा । इसलिये उन्होंने सामाजिक ममता की नींव पर सामाजिक समता के भवन को खड़ा किया । आज भी करोड़ों लोग उनके विचारों से प्रेरणा लेकर उनके जीवन से प्रेरणा लेकर समाज की सेवा के कार्य में लग गये हैं । इस महान व्यक्तित्व के उठ जाने से पूरे समाज और देश को महान क्षति हुई है । इन्हीं शब्दों के साथ मैं उन सभी 17 दिवंगत महान विभूतियों को अपनी ओर से, अपने दल की ओर से ससम्मान श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति दें और उनके शोकाकुल परिवार को इस गहरे दुख को सहन करने का धैर्य दे, साहस, दे, आपसे भी प्रार्थना करता हूं कि इन सभी के शोकाकुल परिवारों तक मेरी और मेरे दल की शोक-संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, विशिष्ट महानुभावों के बारे में जो विचार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी ने व्यक्त किये है, उनसे मैं अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

विशेष रूप से मैं उल्लेख करना चाहूंगा पंजाब के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री बेअंत सिंह जी का। एक ऐसा दौर आया था जब ऐसा लग रहा था कि शायद पंजाब इस देश का अंग नहीं रह जायेगा। आतंकवाद के दौर के दौरान वहां अमन चैन कायम करने के लिये स्व० श्री बेअंत सिंह जी एक योद्धा और शहीद के रूप में सदा-सदा याद किये जायेंगे। यह उनके प्रयासों का फल था कि बैसाखी और होली साथ-साथ मनायी गयी। इस अमर शहीद को प्रणाम करते हुये मैं अनुरोध करूंगा कि हमारे दल की भावनायें उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री राजा दिनेश सिंह जी हमारे जनपद से तीन बार सांसद रहे, मैं उन्हीं के संसदीय क्षेत्र से विधायक चुनकर आ रहा हूं। कालाकांकर परिवार के थे जिसने देश की आजादी की लड़ाई में अपना सर्वस्व न्योछावर किया। यहां गांधी जी, मालवीय जी रहे। विदेशी कपड़ों पर होली यहीं जलाई गई। हिन्दुस्तान का जो अखबार निकला था वह यहीं से निकला था और राजा साहब के प्रयास से ही वह चला। मान्यवर, वैसे तो केन्द्र में बहुत से मंत्री होते हैं परन्तु ऐसे कम मंत्री होते हैं जिनका कोई बहुत बड़ा योगदान होता है। द्वितीय विश्व युद्ध के समय जो गुट निरपेक्ष आन्दोलन चला, राजा दिनेश जी उसके जनक ही नहीं अग्रज थे। गुट निरपेक्ष आंदोलन का जब तक परचम लहराता रहेगा राजा दिनेश सिंह जी को शांति के लिये याद किया जाता रहेगा। वे एक अच्छे लेखक भी थे। जो आधुनिक पंचायती राज की व्यवस्था की गई उनके रचनाकारों में से वे एक थे। उनकी सेवायें जो देश के लिये उन्होंने की, सदा सदा के लिये याद की जाती रहेंगी।

मान्यवर, श्रीमती अरुणा आसफ अली जी देश की आजादी की प्रेरणा थीं। मैं उन्हें अपने श्रद्धा के सुमन अर्पित करते हुये कहना चाहूंगा कि 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान मुम्बई के तत्कालीन ग्वालियर टैंक मैदान में उन्होंने राष्ट्रीय ध्वज फहराया था।

इसी तरह से राम कृष्ण खत्री जी, शिव वर्मा जी, जिन्होंने ब्रिटिश हूकूमत को खत्म करने की कोशिश की थी आज उन सभी दिवंगत महानुभावों को याद करते हुये अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये आपसे आग्रह करूंगा कि मेरी व मेरे दल की शोक-संवेदनायें उनके परिवारजनों तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री कोकब हमीद–

मान्यवर, देश और विदेश की 17 महान आत्माओं के बारे में यहां उल्लेख है। मैं सबसे पहले श्री बेअंत सिंह जी को जिनको मैं व्यक्तिगत रूप से भी जानता था, श्रद्धांजलि अर्पित करूंगा उनकी सबसे बड़ी कुर्बानी यह थी कि जिस जमाने में पंजाब में कोई पहुंचने की ताकत नहीं रखता था, उस दौर में पंजाब में उन्होंने शांति लायी और उसी वजह से जब वे मुख्य मंत्री वहां बने चूंकि आतंकवाद को अपना काम करना ही था, उसी वजह से उनकी हत्या हुई और उसी तरह से इजरायल के पूर्व प्रधान मंत्री मिस्टर यित्जाक राबिन भी उसी की एक श्रृंखला के शिकार थे, टेररिज्म के, विश्व शान्ति वे लाना चाहते थे, ट्रीटी साइन हो रही थी, इसी वजह से उनकी भी हत्या कर दी गई।

राजा दिनेश सिंह जी को मैं व्यक्तिगत रूप से जानता था मेरा यह सौभाग्य था कि जिस स्कूल के वे पढ़े हुये थे दून स्कूल के, मैं भी उसी का पढ़ा हुआ हूं, वहां गोल्डन जुबली प्रोग्राम के दौरान, जिसका कार्यक्रम 2–3 दिन चला, उस दौरान उनसे मुलाकात करने का अवसर मिला उनका योगदान भारत की सियासत में रहा है मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि इनके सहित बाकी जो लोग हैं, उनके खानदान को भी आप हमारी तरफ से और हमारे दल की तरफ से शोक-संवेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री राम आसरे पासवान–

आदरणीय अध्यक्ष जी, ये जो सत्रह महान राष्ट्रीय नेता जिन्होंने आजादी की लड़ाई लड़ी है आज उनके प्रति शोक-संवेदना विधान सभा में दी जा रही है इनमें से कई दिवंगत नेताओं ने साहित्य के क्षेत्र में तथा राजनीति के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया है। आज भी इन्हें लोग याद करते हैं। चाहे पंजाब के पूर्व मुख्य मंत्री श्री बेअंत सिंह जी का सवाल हो, चाहे उड़ीसा के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री बीजू पटनायक का सवाल हो, चाहे हिन्दी जगत के सुप्रसिद्ध पत्रकार एवं सम्पादक डा० लक्ष्मी शंकर व्यास का सवाल हो चाहे प्रसिद्ध साहित्यकार श्री उपेन्द्र नाथ अश्क का सवाल हो चाहे आन्ध्र प्रदेश के भूतपूर्व मुख्य मंत्री का सवाल हो या इजरायल के भूतपूर्व प्रधान मंत्री यित्जाक राबिन का सवाल हो या भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री दिनेश सिंह का सवाल हो। श्री हितेश्वर सैकिया, श्रीमती जानकी राम चन्द्रन, श्री नीलम संजीव रेड्डी, बाला साहब देवरस, श्रीमती अरुणा आसफ अली, श्री राम कृष्ण खत्री, श्री शिव वर्मा, श्री डेंग श्याओपिंग चीनी नेता, डा० बी० गोपाल रेड्डी इन नेताओं ने गांधी जी और लोहिया जी और श्री जय प्रकाश नारायण जी के नेतृत्व में आजादी की लड़ाई में अंग्रेजों के खिलाफ जो योगदान दिया था। आज ऐसे सभी दिवंगत नेताओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की जा रही है। मुझसे पहले मा० नेता सदन, मा० नेता विरोधी दल, मा० नेता भारतीय जनता पार्टी, मा० नेता कांग्रेस, नेता किसान कामगार पार्टी ने जो भावनायें व्यक्त की हैं, उससे मैं भी अपने को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, मेरा निवेदन है कि आप मेरी तथा मेरे दल की संवेदनायें शोक- संतप्त परिवारों तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री राम जग–

माननीय अध्यक्ष जी, शहीदे आजम भगत सिंह के साथ श्री वर्मा जी और दुनियां के सबसे बड़े देश चीन के महान विभूति श्री डेंग श्याओपिंग तथा इनके साथ जिन महान विभूतियों का निधन हुआ है जिन्होंने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो सेवायें की हैं और गरीबों के उत्थान के लिये जो अपना योगदान दिया है और जिन महान विभूतियों की आतंकवाद के कारण हत्यायें हुई हैं। किसी की लम्बी बीमारी के बाद मृत्यु हुई हो, इन सबके बारे में मा० नेता सदन, मा० नेता विरोधी दल, मा० नेता भारतीय जनता पार्टी, मा० नेता किसान कामगार पार्टी, नेता कांग्रेस पार्टी आदि अन्य नेताओं ने अपने विचार व्यक्त किये हैं उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं श्री वर्मा जी के साथ मुझे भी भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) में काम करने का अवसर मिला था उन्होंने शहीदे आजम भगत सिंह के साथी के रूप में आजादी की लड़ाई में जो उनकी अग्रिम भूमिका रही और भगत सिंह के सपनों को साकार करने के लिये उन्होंने जो लाल झंडा उठाया उसे वह जीवनपर्यन्त आगे बढ़ाते रहे वह अन्तिम समय तक भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के सदस्य रहे। एक शिष्य के रूप में भी उन्होंने मेरा क्लास लिया है ऐसे महान विभूति आज हमारे देश से चले गये हैं उनके प्रति मैं और मेरा दल श्रद्धांजलि

अर्पित करता है तथा साथ ही दुनियां की सबसे बड़ा आबादी वाला देश चीन की महान विभूति डेंग श्याओपिंग ने 1949 की क्रांति में अग्रणी भूमिका निभाने के बाद दुनियां को यह दिखा दिया कि मार्क्स और लेनिन के सिद्धान्तों के आधार पर देश की तरक्की कैसे की जा सकती है और गरीबी को कैसे मिटाया जा सकता है ? इनके प्रति भी मैं और मेरा दल श्रद्धांजलि अर्पित करता है । इसी प्रकार श्री बेअंत सिंह जैसे व्यक्ति जिन्होंने पंजाब में आतंकवाद को समाप्त करने के लिये संघर्ष किया ऐसे लोग किसी न किसी रूप में आतंकवाद के शिकार बने । इतना सब होने के भाद भी इन महानविभूतियों ने निरन्तर संघर्ष किया । इन 17 नेताओं ने अन्तर्राष्ट्रीय जगत में किसी न किसी रूप मे कार्य किया है, जिसे आप सभी लोग भली-भांति जानते हैं । आज इन्ही सब दिवंगत आत्माओं को हम याद कर रहे हैं । इन महान विभूतियों ने जो संकल्प लिया था, उन्हें हम साकार करने की कोशिश करें । यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि इन लोगों के प्रति होगी । चीन जैसे विशाल देश की इस महान विभूति ने दुनियां को जो रास्ता दिखाया, उस सपने को हम साकार करेंगे । माननीय अध्यक्ष जी, इन 17 महान विभूतियों के प्रति हमने जो संवेदना के भाव प्रकट किये हैं, उन्हें आप इन सभी दिवंगत आत्माओं के परिवारों तक पहुंचाने का कष्ट करेंगे ।

श्री रघुवर दयाल वर्मा–

माननीय अध्यक्ष जी, माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी, तथा अन्य नेताओं ने हमारे देश की इन महान विभूतियों तथा विदेश की दो महान विभूतियां के प्रति जो विचार व्यक्त किये हैं उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं । श्रीमन् विशेष रूप से श्रीमती अरुणा आसफ अली जी, जो स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन के साथ-साथ हिन्दुस्तान की राजनीति में जो समाजवादी आचरण और समाजवादी चिन्तन तथा समतामूलक समाज की जो आधार-शिला रखी, उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है । डाक्टर राम मनोहर लोहिया जी के नेतृत्व में, गांधी जी के नेतृत्व में, समाजवादी चिन्तन की जो फौज तैयार की उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है । हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई में उनकी जो अग्रणी भूमिका रही, उसे हमेशा याद किया जायेगा । हमें भी उनके साथ काफी समय तक विचार-विमर्श करने व उनके साथ चलने का मौका मिला । हमारे देश के राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी जी, जो हमारे बीच में अब नहीं रहे, इन सभी महान विभूतियों ने इस देश की जो सेवा की, इन सबके प्रति मैं और मेरा दल शोक संवेदना प्रकट करता है और आपसे अनुरोध है कि हमारे संवेदना के इन भावों को इन शोक-संतप्त परिवारों तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

(भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेता तथा समाजवादी जनता पार्टी के नेता का नाम पुकारे जाने पर सदन में उपस्थित नहीं थे ।)

श्री अध्यक्ष–

माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी, माननीय नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, माननीय नेता भारतीय किसान कामगार पार्टी, माननीय नेता भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, माननीय नेता समता पार्टी एवं माननीय सदस्यगण, पिछले 20 महीनों में देश के 15 व विदेश के 2 महान विभूतियों का निधन हो गया । पूर्व राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी, श्री बाला साहब देवरस जी, श्री राम कृष्ण खत्री जी, श्री शिव वर्मा जी, श्री दिनेश सिंह जी ऐसे अनेक लोग हैं जो राजनैतिक

गगन में तथा अपने-अपने क्षेत्र में एक सितारे की तरह चमकते रहे । श्री नीलम संजीव रेड्डी जी, जो भारत के राष्ट्रपति रहे उन्होंने संसदीय इतिहास में लोक सभा के अध्यक्ष पद पर दो बार आसीन होकर, विशेष योगदान दिया । आज भी जब सदन की कार्यवाही का संचालन होता है तो उनके द्वारा दी गई व्यवस्था से ही हम मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं । इसी क्रम में श्री बाला साहब देवरस जी को जिन्हें मैं व्यक्तिगत रूप से जानता था, वह अभूतपूर्व संगठनकर्ता थे । वे बहुत ही सरल व्यक्तित्व के व्यक्ति थे और समाज के प्रत्येक वर्ग के लिये, समाज के प्रत्येक क्षेत्र में चिन्तन करने वाले व्यक्ति थे । उनकी दूरदृष्टि और राजनीतिक समाज सेवा से हम सदैव लाभ लेते रहेंगे । राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ आज भी उनकी सेवाओं को याद करता रहेगा । आज उनकी प्रेरणा से लाखों करोड़ों लोग विभिन्न सेवा कार्यों से जुड़े हुये हैं । श्री राम कृष्ण खत्री बड़े ही सुदृढ़ मनोबल के व्यक्ति थे । जब ।। वीं विधान सभा का गठन हुआ और उसने एक निर्णय लिया कि स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का सम्मान किया जायेगा तो उस समय श्री राम कृष्ण खत्री जी बीमार थे और वह नहीं आ सके । उस समय उस सम्मान के प्रतीक को लेकर मैं उनके पास गया था तो उन्होंने मुझसे बिगड़ती हुई राजनीति पर चिन्ता व्यक्त की थी उन्होंने मुझसे कहा कि राजनीति ने नैतिकता को तिलांजलि दे दी है और वह किस सीमा तक नीचे गिर जायेगी इसका अंदाज लगाना मुश्किल है । आज वह हमारे बीच नहीं हैं । श्री शिव वर्मा जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में एक इतिहास बनाया । उन्होंने काला पानी की सजा भुगती थी । आज भी उनके मृत्यु के बाद से कोई एक ऐसा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कदाचित जीवित नहीं है जिसने अण्डमान निकोबार में सजा काटी हो । उनकी संकल्प शक्ति समाज सेवा, स्वतंत्रता संग्राम में योगदान हम कभी भी नहीं भुला सकते हैं । डा० दिनेश सिंह जी से मेरा व्यक्तिगत परिचय था । श्री प्रमोद तिवारी जी ने जो भावनायें उनके प्रति व्यक्त की हैं मैं उससे अपने को सम्बद्ध करता हुआ एक बात कहना चाहूंगा । जब पहली बार मैं उनसे मिला था तो मिलने के बाद मुझे ऐसा नहीं लगा कि वे विदेश मंत्री जैसे पद पर होंगे । उनका सरल व्यक्तित्व था । वे बड़ी ही धीमी आवाज में बोलते थे ऊंची आवाज में बात करते हुये मैंने उनको नहीं सुना । वे बड़े ही मनोहर व्यक्ति थे । उनमें बड़ी ही सूझ-बूझ थी । उनके द्वारा दिये गये योगदान को आज भी हम भुला नहीं सकते हैं और उनको हमेशा उनको याद किया जायेगा । डा० एम० चेन्ना रेड्डी भी बड़े ही विद्वान व्यक्ति थे । वे उन राज्यपालों में से थे जो संकट के समय कोई न कोई रास्ता निकाल लिया करते थे । चाहे उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के रूप में हो, या तमिलनाडु के राज्यपाल के रूप में । श्री उपेन्द्र नाथ अश्क प्रयाग के रहने वाले थे उनसे प्रायः मेरी सांस्कृतिक गोष्ठियों में मुलाकात हुआ करती थी उनकी एक बड़ी पीड़ा थी कि जो सम्मान शासन की ओर से दिया जाना चाहिये वह नहीं दिया जा रहा है । वे प्रसिद्ध उपन्यासकार थे । श्री उपेन्द्र नाथ अश्क जी की सेवाओं को जो हिन्दी साहित्य में की गयी हैं हम लोग भुला नहीं सकते हैं । डा० लक्ष्मीशंकर व्यास जी भी एक अच्छे साहित्यकार और पत्रकार थे । उन्होंने दर्जनों पुस्तकें लिखीं । उनके द्वारा दिये गये हिन्दी साहित्य के योगदान को हम भुला नहीं सकते हैं । इजराइली प्रधान मंत्री श्री यित्जाक राबिन एक महान नेता और शान्ति के दूत थे इन्होंने अरब और इजराइल के जो सम्बन्ध बिगड़ गये थे उनको सुधारने का काम किया । इनका यह योगदान हमेशा के लिये याद किया जायेगा । इसी तरह से चीनी नेता डेंग श्याओपिंग एक महान नेता थे इन्होंने चीन को साम्यवाद के रंग में रंगने का काम किया जिस कारण वह प्रगति के पथ पर चला । इन्होंने आधुनिक विज्ञान को तरजीह दी । उनका यह योगदान आज भी याद रखा जायेगा । हम उसे भुला नहीं सकते । मैं उन सभी 17 दिवंगत आत्माओं के प्रति जो उद्गार माननीय नेता सदन, माननीय नेता

माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी तथा अन्य माननीय नेताओं के रखे हैं, से अपने को सम्बद्ध करता हूं और यह चाहता हूं कि आप उनके सम्मान में दो मिनट का मौन धारण करें ।

(दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिये सभी सदस्य सदन में दो मिनट मौन खड़े हुये ।)

हरिद्वार में सोमवती स्नान पूर्व के समय भगदड़ में, चरखी-दादरी की विमान दुर्घटना में एवं सउदी अरब स्थित मीना शहर के अग्निकाण्ड में दिवंगत यात्रियों के संबंध मे शोक-प्रस्ताव

मुख्य मंत्री (सुश्री मायावती)–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से एक शोक-प्रस्ताव रखना चाहती हूं ।

"यह सदन गत वर्ष 15 जुलाई, 1996 को हरिद्वार में, सोमवती स्नान पर्व के समय भगदड़ के कारण जिन दिवंगत व्यक्तियों, चरखी-दादरी की विमान दुर्घटना में 12 नवम्बर, 1996 को निरीह लागों की हुई मृत्यु और 15 अप्रैल, 1997 को सउदी अरब मीना शहर के अग्निकाण्ड में मरने वाले हज यात्रियो के प्रति शोक प्रकट करता है तथा उनको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है । सदन ईश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत व्यक्तियों की आत्मा को शान्ति प्राप्त हो तथा उनके शोक-संतप्त परिवारों को पहुंची हुई क्षति को सहन करने की उन्हें शक्ति मिले ।"

नेता विरोधी दल (श्री धनी राम वर्मा)–

श्रीमन् विभिन्न हादसों में सैकड़ों लोगों की जानें गयी हैं, उस संबंध में जो विचार माननीय नेता सदन ने प्रस्तुत किये हैं, मैं अपने को उससे सम्बद्ध करता हूं । मैं कहना चाहूंगा कि हरिद्वार जो एक पवित्र स्थल है वहां पर 66 लोग दिवंगत हुये हैं । इन 66 व्यक्तियों के शरीर पंच तत्व में विलीन हो गये, लेकिन उनकी आत्मायें परम तत्व में विलीन हुई । अगर इन पवित्र स्थलों से लोग अपने-अपने घर वापस आते तो निश्चित रूप से उनके साथ पवित्र विचार आते और लोगों को कुछ न कुछ प्रदान करते । इसी तरह से सउदी अरब और कजाक के विमान के टकराने से 391 लोगों की जानें गयी । उनमें से कितने ही ऐसे व्यक्ति थे जिनकी सेवायें देश और समाज के लिये लाभकारी और चिर स्मरणीय रहेंगी । इन शब्दों के साथ अभी हाल में जो हज यात्री मक्का के पास आग लगने से स्वर्गवासी हुये, वह भी अगर वापस आते और अपने अपने देश में पवित्र विचार फैलाते और देश और समाज में पवित्र विचार देते और समाज को आगे बढ़ाने का काम करते । मैं माननीय नेता सदन ने जो शोक-प्रस्ताव प्रस्तुत किया है, उसका समर्थन करता हूं । उससे अपने को सम्बद्ध करता हूं ।

श्री कल्याण सिंह–

श्रीमन् 15 जुलाई, 1996 को हरिद्वार में सोमवती स्नान पर्व के समय हुये भगदड़ के कारण दिवंगत व्यक्तियों, चरखी-दादरी की विमान दुर्घटना में 12 नवम्बर, 1996 को निरीह लोगों की हुई मृत्यु, 15 अप्रैल, 1997 को सऊदी अरब स्थित मीना शहर के अग्निकाण्ड में मरने वाले सैकड़ों हज यात्रियों की जो हृदय विदारक दुर्घटना हुई है इस संबंध में माननीय नेता सदन ने जो शोक-प्रस्ताव इस सम्मानित सदन में प्रस्तुत किया है उसका समर्थन करता हूं ।

श्री अध्यक्ष–

प्रश्न यह है कि यह सदन गत वर्ष 15 जुलाई, 1996 को हरिद्वार में सोमवती स्नान पर्व के समय भगदड़ के कारण दिवंगत व्यक्तियों, चरखी-दादरी की विमान दुर्घटना में 12 नवम्बर, 1996 को निरीह लोगों की हुई मृत्यु, 15 अप्रैल, 1997 को सऊदी अरब स्थित मीना शहर के अग्निकाण्ड में मरने वाले हज यात्रियों के प्रति शोक प्रकट करता है तथा उनको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है। सदन ईश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत व्यक्तियों की आत्मा को शांति प्राप्त हो तथा उनके शोक-संतप्त परिवारों को पहुंची हुई क्षति को सहन करने की उन्हें शक्ति मिले।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।)

बंगलादेश के पच्चीसवें मुक्ति दिवस के वीर बलिदानी शहीदों की स्मृति के सम्बन्ध में शोक-प्रस्ताव

मुख्य मंत्री (सुश्री मायावती)–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से दूसरा शोक प्रस्ताव रख रही हूं–"यह सदन 16 दिसम्बर, 1996 को बंगलादेश के 25वें मुक्ति दिवस पर उनके बलिदान और शौर्य की याद ताजा कराने वाले शहीदों के प्रति शोक प्रकट करता है और उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है। सदन ईश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत शहीदों की आत्मा को शांति प्रदान करे।"

श्री कल्याण सिंह–

श्रीमन्, जो शोक-प्रस्ताव माननीय नेता सदन ने प्रस्तुत किया है मैं उसका समर्थन करता हूं।

श्री अध्यक्ष–

प्रश्न यह है कि यह सदन 16 दिसम्बर, 1996 को बंगलादेश के 25वें मुक्ति दिवस पर उनके बलिदान और शौर्य की याद ताजा कराने वाले शहीदों के प्रति शोक प्रकट करता है और उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है। सदन ईश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत शहीदों की आत्मा को शांति प्रदान करे।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।)

श्री अध्यक्ष–

अब हम उठते हैं कल दिनांक 23-4-97 को 11 बजे पुनः बैठेंगे। इसके बाद सदन 2 बजकर 45 मिनट पर अगले दिन के 11 बजे तक के लिये स्थगित हो गया।

लखनऊ :
दिनांक 22 अप्रैल, 1997

प्रेम चन्द्र सक्सेना,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

पी० एस० यू० पी०–एल० 67 विधान सभा (143)–1997–813 (डी० टी० पी०)।